

खबरें फटाफट

जिला स्तरीय 14 वर्षीय कबड्डी प्रतियोगिता में डिवाइज्ड पब्लिक स्कूल कानपुर फाइनल में

संजीवनी टुडे
उदयपुर। जिला स्तरीय 68वीं 14 वर्षीय कबड्डी प्रतियोगिता में डिवाइज्ड पब्लिक स्कूल कानपुर के बच्चों ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए, फाइनल में जगह बनाई। डिवाइज्ड पब्लिक स्कूल कानपुर के कोच भगवती प्रसाद आदिन्द्र ने बताया कि डिवाइज्ड के बच्चों का तुलसी अमृत कानोड़ के बच्चों के साथ फाइनल का मैच खेला जाएगा। विद्यालय प्राचार्य ने सभी बच्चों को शुभकामनाएं प्रेषित की।

नगर निगम में चिकित्सा कैम्प का आयोजन

संजीवनी टुडे
पाली। स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के अंतर्गत नगर निगम में चिकित्सा कैम्प का आयोजन 30 सितम्बर तक किया जा रहा है जिसमें समस्त सफाई मित्रों के स्वास्थ्य की जांच कर आवश्यकता अनुसार निशुल्क दवाईयां दी जा रही हैं। इसके लिये चिकित्सक योगेश चौधरी, नर्सिंग अधिकारी खुशीदा खान व फार्मासिस्ट आफ्नाब अहमद अपनी सेवा दे रहे हैं। एनयुएलएम जिला प्रबंधक देवेन्द्र सिंह राणावत ने बताया कि इस अवसर पर नगर निगम सचिव स्वरूप सिंह, राजस्व अधिकारी जितेन्द्र व्यास, विक्रम सिंह विश्वासी व किशन सिंह रतनु स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के सहप्रभारी मनीष आत्रे, एनयुएलएम जिला प्रबंधक देवेन्द्र सिंह राणावत, एमबीएम से मुकेश मकराना व सफाई जोन प्रभारी दिलिप व सफाई मित्र मौजूद रहे।

जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति की बैठक 7 अक्टूबर को

संजीवनी टुडे
डूंगरपुर। जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक 7 अक्टूबर सोमवार को प्रातः 11.30 बजे जिला परिषद के इंडीपी सभा भवन में आयोजित की जाएगी। मुख्य कार्यकारी अधिकारी हनुमान सिंह राठौड़ ने बताया कि डूंगरपुर-बांसवाड़ा सांसद श्री राजकुमार रात के अध्यक्षता एवं श्री मनालाल रावत सांसद उदयपुर लोकसभा संसदीय क्षेत्र की सह-अध्यक्षता में बैठक में सभी योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की जाएगी। जिला स्तरीय अधिकारीगण योजनाओं की प्रगति प्रतिवेदन 1 अक्टूबर को दोपहर 1 बजे तक जिला परिषद ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ की ई-मेल आईडी पर अनिवार्य रूप से भिजवाने और बैठक में निर्धारित तिथि एवं समय पर आवश्यक रूप से उपस्थित होने के निर्देश दिए हैं।

यहाँ आज विद्युत आपूर्ति रहेगी बाधित

संजीवनी टुडे
राजसमन्द। एवीओएनएल के सहायक अभियन्ता के.सी. खटोक ने बताया कि 20 सितम्बर को 33 के.वी. लाईन मोही पर आवश्यक रखरखाव होने के कारण इससे जुड़े 33/11 के.वी. जी.एस.एस. मोही, राज्यावास एवं पाडोलाई से सम्बन्धित ग्रामों जैसे मोही, पोपली, राज्यावास, अमलाई, भाटोली, पाडोलाई, शिवपुरी, सथाणा आदि ग्रामों की विद्युत आपूर्ति प्रातः 10.00 बजे से 01.00 बजे तक बाधित रहेगी। साथ ही 11 के.वी. घाटी फीजर पर आवश्यक रखरखाव होने के कारण इससे जुड़े ग्रामों जैसे घाटी, रूपाखंडा, खखलिया खेडा की विद्युत आपूर्ति समय 10.00 बजे से 04.00 बजे तक बाधित रहेगी। उक्त दिवस को ही 33 के.वी. लाईन कुंवारिया पर आवश्यक रखरखाव कारण बंद किया जायेगा।

ऑफिसर कर्नल मनोज के कैम्प कमांडेंट की तरफ से भींडर कईट्स को दिए दो स्वर्ण पदक

संजीवनी टुडे
भींडर। पीएम श्री महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय ओवर के एनसीसी गतिविधि के अंतर्गत संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में भाग लेकर 27 कैडेट्स (क्लर) शानदार उपलब्धियां अर्जित की और 2 राज आर एड वी रेजिमेंट एनसीसी नवानिया के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल मनोज के कैम्प कमांडेंट की तरफ से दो स्वर्ण पदक कईट्स में प्राप्त किए। 8 सितंबर से 17 सितंबर, 2024 तक आयोजित यूएस ओस्टवाल अंतर्राष्ट्रीय विद्यालय परिसर, मंगलवाड़ में सेना के होनहार जवानों और अधिकारियों ने राजस्थान के 450 कैडेट्स में संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में अनेक गतिविधियों में भाग लेकर अपने विद्यार्थी जीवन में संस्कारवान और अनुशासित जीवन के गुणों को महसूस किया और भावी जीवन में श्रेष्ठ विद्यार्थी जीवन के लिये संकल्प के साथ आज

विद्यालय परिसर में प्रधानाचार्य अशोक कुमार जोशी और केयर टेकर ऑफिसर अक्षयराज और समस्त विद्यालय के साथियों ने स्वागत किया गया। एनसीसी स्कूल और कॉलेज जाने वाले छात्रों के युवा मन में अनुशासन, सौहार्द और राष्ट्रीय भावना पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा कि राजस्थान के 450 कैडेट सीखने, प्रशिक्षण लेने और अपने अनुभव और कौशल साझा करने के लिए शिविर में भाग लिया। नवानिया में एनसीसी कैम्प नियमित रूप से आयोजित किया जाता है, हालांकि यूएस ओस्टवाल अंतर्राष्ट्रीय विद्यालय परिसर, मंगलवाड़ में एनसीसी कैम्प आयोजित किया गया। कैम्प की अवधि के दौरान कई गतिविधियों की योजना बनाई गई थी, जिसमें स्वच्छ भारत जागरूकता, हथियार प्रशिक्षण, फायरिंग, ड्रिल अभ्यास, टेंट पिचिंग, स्वास्थ्य स्वच्छता और अन्य



सामाजिक मुद्दों पर व्याख्यान शामिल हैं, ताकि कैडेटों में जागरूकता, सौहार्द और नेतृत्व गुण पैदा किए जा सकें। कैम्प के दौरान दंत जांच और आपदा प्रतिक्रिया और प्रबंधन पर एक प्रदर्शन की भी योजना बनाई गई थी। इन कैडेटों को प्रेरित करती है, बल्कि एनसीसी कैडेटों द्वारा की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों का संचालन करने के लिए

स्कूलों और कॉलेजों के शिक्षकों के साथ-साथ सेना प्रशिक्षक भी कैम्प ऑफिसर अक्षयराज की देखरेख में शिविर में भाग ले लिया था। उन्होंने कहा कि एनसीसी न केवल इन कैडेटों को प्रेरित करती है, बल्कि एनसीसी कैडेटों द्वारा की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से समाज के लिए एक

उदाहरण के रूप में भी कार्य करती है। रक्तदान जागरूकता, प्राकृतिक संसाधनों की चर्चा और अन्य सामाजिक मुद्दे कुछ ऐसे गतिविधियाँ हैं जिनमें कैडेट साल भर भाग लेते हैं। सैन्य हथियार और उपकरण हमेशा से ही युवा मन को आकर्षित करते रहे हैं क्योंकि वे रक्षा सेवाओं में शामिल होने के लिए अच्छे प्रेरक कारक हैं। वे विशेष रूप से एनसीसी कैडेटों के लिए सुरक्षा और राष्ट्रीय गौरव की भावना प्रदान करते हैं। ऐसा ही एक उपकरण सैन्य हथियार और उपकरण हमेशा से ही युवा मन को आकर्षित करते रहे हैं क्योंकि रक्षा सेवाओं में शामिल होने के लिए अच्छे प्रेरक कारक होते हैं। वे विशेष रूप से एनसीसी कैडेटों के लिए सुरक्षा और राष्ट्रीय गौरव की भावना प्रदान करते हैं।

अभिभावक और उपस्थित एसडीएमसी और एसएमसी के सभी सदस्यों ने अपने

बच्चों को पहली बार घर से बाहर सेना के निदेशन में अनुशासन के इस जीवन को सभी ने हर्ष और उल्लास व्यक्त किया। सभी कैडेट्स ने अपने अपने संस्मरण सुनाये तो उपस्थित अभिभावक के आँखों में आनन्द के अनुभवा निकल रहे थे और अभिभावक ने विद्यालय का इस उपलब्धि के लिए आभार व्यक्त किया। इस वर्ष लगातार एनसीसी, एनएसएस, स्काउट-गाइड, कब-बुलबुल खेल, एक्सोमर विजिट और पीएम श्री विद्यालय की अनेक गतिविधियों से सभी विद्यार्थियों को सभी मायने में शिक्षा के गतिविधि आधारित शिक्षा का शानदार भविष्य के लिए विधायक प्रतिनिधियों मुरली मनोहर तिवारी, कृष्ण गोपाल मुंडडा, हीरा लाल पंड्या, दिनेश कुमार व्यास ने अपनी शुभकामनाये व्यक्त की। विद्यालय एसडीएमसी सचिव दिनेश प्रकाश शर्मा ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

सरदार पटेल के अपमान को लेकर सलूमबर में पटेल सेना का विरोध प्रदर्शन, आंदोलन की दी चेतावनी

संजीवनी टुडे
सराडा। श्री राष्ट्रीय सरदार पटेल सेना ने गुरुवार को सलूमबर कलेक्ट्री के सामने प्रदर्शन किया। पटेल पाटीदार डांगी समाज ने उत्तरप्रदेश के बरेली थाना क्षेत्र में एक जुलूस के दौरान कुछ युवकों द्वारा लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा पर जूते चप्पल की माला पहनाकर अपमान करने पर जमकर आक्रोश जताया। पटेल समाज ने कलेक्टर को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपते हुए मामले में कड़ी कार्रवाई की मांग की। इसी क्रम में सरदार पटेल डांगी विकास संस्थान व श्री राष्ट्रीय सरदार पटेल सेना के प्रदेश संयोजक महेंद्र डांगी व वीरेंद्र डांगी ने कहा कि पूर्व में उज्जैन में लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा को ट्रैक्टर से गिराने एवं उनका अपमान करने की घटना के बाद अब फिर से सरदार पटेल का अपमान अब यह स्वीकार नहीं होगा। आरोपियों को कड़ी सजा नहीं दी जाने पर श्री राष्ट्रीय सरदार पटेल सेना राजस्थान में आंदोलन करेगी। साथ ही उदयपुर संभा अध्यक्ष हीरालाल पटेल खीरावाड़ा ने बताया कि उत्तरप्रदेश के बरेली



थाना अंतर्गत नवाबगंज में राष्ट्र के नायक सरदार पटेल का यह अपमान देश का अपमान है। पूरा पटेल पाटीदार डांगी समाज इस घटना की कड़ी निंदा करता है। पटेल समाज ने कलेक्टर को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपते हुए मांग रखी है कि प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और देश के गृहमंत्री से व्यक्तिगत बात कर सरदार पटेल का अपमान करने वाले बदमाशों को गिरफ्तार करें। बदमाशों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए अन्यथा पटेल

समाज बड़ा आंदोलन करेगा। श्री राष्ट्रीय सरदार पटेल सेना के प्रदेश अध्यक्ष सुनील पटेल ने सभी जिलों में श्री राष्ट्रीय सरदार पटेल सेना के कार्यकर्ता के ज्ञापन देने की जानकारी दी। इस दौरान मुकेश पटेल खोलडी, हीरालाल पटेल ओड़वाड़िया, महेंद्र पटेल, अध्यक्ष शंकरलाल पटेल, नानजी पटेल देवागंव, प्रहलाद पटेल, वीरेंद्र पटेल, प्रदीप पटेल, रमेश पटेल, खेमराज पटेल, नारायण पटेल, हीरालाल पटेल, भेरूलाल पटेल सहित सेकड़ों समाजजन मौजूद रहें।

राइजिंग राजस्थान: एक दिवसीय इन्वेस्टर समिट 4 को

संजीवनी टुडे

डूंगरपुर। राजस्थान सरकार के महत्वपूर्ण कार्यक्रम "राइजिंग राजस्थान" अंतर्गत जिले में इन्वेस्टमेंट समिट-2024 का आयोजन 4 अक्टूबर, 2024 को होटल लेक व्यू पैलैस, डूंगरपुर में प्रस्तावित है। इस संबंध में अतिरिक्त जिला कलेक्टर दिनेश धाकड़ की अध्यक्षता एवं उद्योग एवं वाणिज्य विभाग मुख्यालय जयपुर से संयुक्त आयुक्त पी.एन. शर्मा की मौजूदगी में गुरुवार को जिला कलेक्टर सभा कक्ष में बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों, उद्योग संघों के अध्यक्ष एवं प्रतिनिधि, उद्योगपति मौजूद रहे। बैठक में आयोजन स्थल, आमंत्रण, कार्यक्रम के व्यवस्थाओं के बारे में चर्चा कर निर्देश प्रदान किए गए। साथ ही स्थानीय उद्योगियों द्वारा अधिक से अधिक सहभागिता निभाते हुए कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया गया। संयुक्त आयुक्त पी.एन. शर्मा ने बताया कि राज्य सरकार की मंशा है कि प्रत्येक जिले में नई इकाइयां स्थापित हो, निवेश बढ़े, जिससे राज्य में



नया औद्योगिक वातावरण बने। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने आग्रह किया कि जिले में अधिक से अधिक निवेश लाया जाए, ताकि उन औद्योगिक एवं वाणिज्यिक इकाइयों में युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर मिल सकें। जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र डूंगरपुर की महाप्रबंधक मंजू माली ने बताया कि जिला प्रशासन, जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, रीको के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में जिले में निवेश बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। जिले में अब तक लगभग 450 करोड़ रूपये

से अधिक राशि के निवेश लिए एमओयू प्रस्तावित हो चुके हैं, जिसमें ऊर्जा, पर्यटन, शिक्षा, आईटी आदि सेक्टर से संबंधित हैं। साथ ही एक जिला एक उत्पाद अंतर्गत डूंगरपुर जिले की मार्बल ग्रेनाइट एड टाइल्स की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। बैठक में जिला स्तरीय अधिकारीगण, औद्योगिक समिति सागवाड़ा अध्यक्ष नानालाल दर्जी, प्रकाश सोनी राजाराम सैनी, मेवाड़ दूध डेयरी प्रबंधक डूंगर पटेल, लघु उद्योग भारतीय के प्रतिनिधि पवन जैन, सोमपुरा मूर्तिकला के प्रतिनिधि हिंदेश सोमपुरा मौजूद रहे।

प्रकोष्ठ प्रभारी रखें समन्वय, सूचनाओं का त्वरित आदान-प्रदान: धाकड़



संजीवनी टुडे
डूंगरपुर। जिला निर्वाचन अधिकारी अंकित कुमार सिंह के निर्देश पर गुरुवार को उप जिला निर्वाचन अधिकारी दिनेश धाकड़ ने चौरासी विधानसभा क्षेत्र में प्रस्तावित उपचुनाव के लिए गठित सभी 33 प्रकोष्ठ प्रभारियों की बैठक ली। बैठक में आदर्श आचार संहिता, प्रशिक्षण, वेबकार्टिंग, मतपत्र, मीडिया, कानून व्यवस्था, ईवीएम, भंडार, यातायात सहित सभी प्रकोष्ठों में अब तक की गई कार्रवाई के बारे में जानकारी ली। अब तक की गई तैयारियों की समीक्षा करते हुए उप जिला निर्वाचन अधिकारी धाकड़ ने कहा कि उपचुनाव को लेकर गठित सभी प्रकोष्ठ अपनी भूमिका और कार्य व्यवस्था को पूरी तरह समझ लें। प्रोटोकॉल की अक्षरशः पालना होनी चाहिए। संबंधित गाइडलाइन और मैनुअल का अध्ययन करें और निर्वाचन से जुड़ी सभी प्रक्रियाओं के दौरान निर्धारित प्रोटोकॉल की पालना होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी

प्रकोष्ठ प्रभारियों के मध्य समन्वय होना चाहिए और सूचनाओं का समय पर आदान-प्रदान करें। यदि कोई इश्यू हो, तो तुरंत ध्यान में लाएं। इससे पहले जिला परिषद सीईओ हनुमान सिंह राठौड़ ने प्रभारी अधिकारियों से उनके प्रकोष्ठ से संबंधित कार्यों के बारे में जानकारी ली और आवश्यक निर्देश दिए। प्रकोष्ठ प्रभारियों से मतदान दल गठन, क्रिटिकल, वनरेबल मतदान केंद्रों, वेबकार्टिंग, शैडो एरिया, शांति और कानून व्यवस्था, ईवीएम रिसीप्ट और डिस्पैच व्यवस्था, मतदान दल गठन, आदर्श आचार संहिता, एकिकृत नियंत्रण कक्ष, स्वीप, स्ट चार्ट, यातायात, प्रशिक्षण, शिकायत निराकरण, मतपत्र, ईवीएम आदि से संबंधित तैयारियों की जानकारी ली और कार्य योजना की समीक्षा की। प्रोटोकॉल की अक्षरशः पालना होनी चाहिए। संबंधित गाइडलाइन और मैनुअल का अध्ययन करें और निर्वाचन से जुड़ी सभी प्रक्रियाओं के दौरान निर्धारित प्रोटोकॉल की पालना होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी

रामसौर जूना में बरसात में भी जिला कलेक्टर सिंह ने रात्रि चौपाल में सुनी ग्रामवासियों की परिवेदनाएं

नवीन किसान सेवा केंद्र खोलने तथा नवीन उद्योग भवन बनाने की परिवेदना को रखा प्रमुखता से

संजीवनी टुडे

डूंगरपुर। बुधवार को जिला कलेक्टर अंकित कुमार सिंह लगातार हो रही बरसात के बावजूद पंचायत समिति सीमलवाड़ा की दूरस्थ ग्राम पंचायत रामसौर जूना में रात्रि चौपाल में पहुंच कर ग्रामवासियों की परिवेदनाओं को गंभीरता से सुना तथा निस्तारण के लिए निर्देश प्रदान किये। रात्रि चौपाल में बड़ी संख्या में ग्रामवासी भी मौजूद रहे तथा गांव की आवश्यकताओं, प्राथमिकताओं से जिला कलेक्टर को अवगत कराया। जिला कलेक्टर सिंह ने भी एक-एक परिवेदना को ध्यान पूर्वक सुना तथा संबंधित विभाग/अध्यक्ष से तत्स्थिति और तत्प्राप्तिकार की जानकारी लेकर निस्तारण के लिए दिशा-निर्देश प्रदान किए। रात्रि चौपाल में ग्रामवासियों ने नवीन पंचायत भवन बनाने, कालू गला के घर से राजकीय प्राथमिक विद्यालय सज्जनपुर रोड से कनवा ग्राम पंचायत तक डामरीकरण करवाने, नवीन किसान सेवा केंद्र खोलने, उज्ज्वला गैस कनेक्शन दिलवाने, जल जीवन मिशन के कार्य को शीघ्रता से करवाने, आयुष्मान कार्ड बनवाने की परिवेदनाओं को प्रमुखता से रखा जिस पर जिला कलेक्टर ने संबंधित अधिकारी को मौके पर ही बुलाकर



परिवेदना को जानकारी उपलब्ध कराते हुए निस्तारण के लिए दिशा-निर्देश प्रदान किए। रात्रि चौपाल में जिला कलेक्टर के निर्देश पर जिला स्तरीय अधिकारियों ने अपने विभाग से संबंधित जनकल्याणकारी योजनाओं की निरीक्षण प्रदान किए। रात्रि चौपाल में ग्रामवासियों ने नवीन पंचायत भवन बनाने, कालू गला के घर से राजकीय प्राथमिक विद्यालय सज्जनपुर रोड से कनवा ग्राम पंचायत तक डामरीकरण करवाने, नवीन किसान सेवा केंद्र खोलने, उज्ज्वला गैस कनेक्शन दिलवाने, जल जीवन मिशन के कार्य को शीघ्रता से करवाने, आयुष्मान कार्ड बनवाने की परिवेदनाओं को प्रमुखता से रखा जिस पर जिला कलेक्टर ने संबंधित अधिकारी को मौके पर ही बुलाकर

विभाग उपनिदेशक अशोक शर्मा ने वृद्धावस्था, विधवा, दिव्यांग आदि पेशान योजनाओं, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, पालनहार, विभिन्न छात्रवृत्तियों आदि, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनिल पहाड़िया ने ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज कल्याणकारी योजनाओं, कृषि अधिकारी ने तारबंदी, पाइपलाइन, किसान सम्मान निधि आदि, एवीएनएल अधीक्षण अभियंता ने सौरल ऊर्जा योजनाओं, आईसीडीएस अधिकारी द्वारा पौष्टिक आहार, गर्भवती महिलाओं एवं शिशु की देखभाल आदि योजनाओं की विस्तार

योजनाएं संचालित की जा रही हैं, ऐसे में हमारा भी प्रयास होना चाहिए कि हम बच्चों को उच्च एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रेरित करें तथा साथ ही सफाई उद्योग होने तक सीमित न रहकर उच्च परिणामों के लिए समन्वित प्रयास करें ताकि अभिन्नता होने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या में अधिक इजाफा हो सके। इस अवसर पर उन्होंने कालज कुमार लबाना को इंद्रिया प्रियदर्शिनी अवार्ड में पूरे जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने तथा अन्य शैक्षिक उपलब्धियों पर 12वीं बोर्ड में उच्चतर परिणाम के लिए निशा कुमारी लबाना, दसवीं बोर्ड में निशा कुमारी डामोर का माल्यार्पण कर अभिनंदन किया। चौपाल में सरपंच रमिला देवी डामोर, मुख्य कार्यकारी अधिकारी हनुमान सिंह राठौड़, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनिल पहाड़िया सहित समस्त जिला स्तरीय अधिकारी गण मौजूद रहे। इससे पूर्व जिला कलेक्टर अंकित कुमार सिंह ने सीमलवाड़ा तहसील एवं सीएचसी सीमलवाड़ा का निरीक्षण किया। उन्होंने सीएचसी में स्वाइयों की उपलब्धता, ओपीडी, चिकित्सा संसाधनों, चिकित्सा कर्मियों आदि के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी ली तथा मौसम में भीमारियों में विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए।

विधिक सेवा खेलकूद प्रतियोगिताओं का हुआ आयोजन

विशेष योग्यजनों द्वारा बढ़-चढ़ कर लिया भाग

संजीवनी टुडे

पाली। विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का मंच प्रदान करने के साथ-साथ खेलों के माध्यम से विद्यार्थियों में विधिक जागरूकता का प्रचार प्रसार करने के उद्देश्य से राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, पाली के तत्वावधान में शिक्षा विभाग के सहयोग से विधिक सेवा दिवस 2024 के अवसर पर विशेष योग्यजन/दिव्यांगजनों के लिए पूर्ण रूप से सर्मापित विधिक जागृति के क्रम में "राजसमन्द फॉर अवेयरनेस-उन्नत" के तहत जिला स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन सभी स्पेशल विद्यालयों, सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों के 08 वर्ष की आयु से 18 वर्ष की आयु युवा मानसिक मंदता में 18 वर्ष से अधिक आयु के विशेष रूप से संसर्गजन के मध्य विधिक सेवा खेलकूद प्रतियोगिताएं-2024 का आयोजन किया गया। खेलकूद प्रतियोगिताओं में एक प्रतियोगिताओं में लंबी कूद, शॉटपुट, बेडमिंटन, कैरम, टेबल टेनिस, पेंटिंग/चित्रकला तथा सामूहिक प्रतियोगिता कबड्डी में विशेष योग्यता रखने वाले विद्यार्थियों द्वारा बढ़



चटकर भाग लिया गया।

जिला स्तर की प्रतियोगिताओं का बांगड स्टेडियम, पाली में विक्रम सिंह भाटी, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (आर जिला न्यायाधीश), पाली द्वारा सरस्वती पूजा कर शुभारम्भ किया गया। राजेन्द्र कुमार अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पाली ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल के माध्यम से विधिक जागरूकता को बढ़ावा देने का एक अच्छा तरीका है। उक्त खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन का मुख्य उद्देश्य खेल के जरिये बालकों

में विधिक/कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूकता लाना है तथा सशक्त समाज का निर्माण करना है। वहीं सचिव भाटी ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि उक्त प्रतियोगिताएं खिलाड़ियों को प्रतिभा दिखाने के लिए मंच प्रदान करने हेतु आयोजित की जाती हैं तथा विधिक जागरूकता भी प्रदान करती हैं। जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त टीम एवं खिलाड़ी आगामी संगम स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे। कार्यक्रम में श्री प्रवीण जांगी डी अति. जिला शिक्षा अधिकारी (माध्य) ने भी विद्यार्थियों

गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना: 400 वर्मी कम्पोस्ट इकाई निर्माण के लक्ष्यो का आवंटन

संजीवनी टुडे

राजसमन्द। रासायनिक खेती के दुष्प्रभाव को कम करने एवं किसानों को जैविक खेती की ओर बढ़ावा देने के उद्देश्य से किसानों को उनके गोवंश से, जैविक खाद उत्पादन को प्रेरित करने के लिये कृषि विभाग की ओर से राज्य के किसानों के लिए गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना के तहत वर्मी कम्पोस्ट इकाई निर्माण करने पर प्राप्त होंगे। योजना पर रसायन के दुष्प्रभाव को कम किया जा सकेगा, वहीं दूसरी ओर मृदा के स्वास्थ्य एवं उर्वरा शक्ति को बढ़ा कर टिकाऊ खेती की जा सकेगी। राजसमन्द जिले को घोषणा के अनुसार 400 वर्मी कम्पोस्ट इकाई निर्माण के लक्ष्य आवंटित है। संयुक्त निदेशक कृषि कैलाश चन्द



मेववंशी ने बताया कि जिले के समस्त किसान जिनके पास न्यूनतम 05 गोवंश हो एवं कृषि योग्य भूमि का स्वामित्व हो। संपुक्त खातेचारी की स्थिति में सहखातेदार अधिकार सहमति पर एक ही खसरे में अलग-अलग वर्मी कम्पोस्ट इकाई बनाने पर अनुदान के लिये पात्र होंगे। साथ ही राज्य सरकार के परिपत्रानुसार मंदिर के नाम खेती की जमीन पर भी वर्मी कम्पोस्ट इकाई निर्माण पर निर्धारित पंजिका में वर्णित पुजारी मंदिर भूमि के संरक्षक के रूप में अनुदान के लिये पात्र होंगे। कैलाश चन्द मेववंशी के अनुसार योजना के अन्तर्गत पात्र कृषक अपने स्वयं के एएसएसओ आईडी/जन आधार से स्वयं/ई-मित्र पर जमाबंदी (छ: माह से अधिक पुरानी नहीं) अपलोड

करा आवेदन कर सकता है। किसान साथी पोर्टल पर ऑनलाइन प्राप्त आवेदनों की जांच परचात प्रशासक अधिकृत जाही होने के उपरान्त ही अधिकतम 45 दिवसे में कृषक द्वारा विभागीय मापण्ड अनुसार वर्मी कम्पोस्ट इकाई का निर्माण करना होगा। जैविक उर्वरक उत्पादन के लिये विभागीय मापण्ड अनुसार वर्मी कम्पोस्ट इकाई निर्माण पर लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतम 10000 रुपये प्रति इकाई आकार अनुसार यथा अनुपात अनुदान देय होगा। वर्मी कम्पोस्ट इकाई की स्थापना के लिये 20 फीट 3 फीट 6 1.5-2 फिट आकार की एक बेड की इकाई अथवा 10 फीट 3 फीट 1.5-2 फिट आकार की दो बेड की इकाई ली तथा अनुपात अनुदान देय होगा। श्रेष्ठ में स्थानीय उपलब्धता के अनुसार टिन आदि की छाया सामग्री उपयोग में ली जावे। एक इकाई में कम से कम 8-10 किलोग्राम केचुरे कृषक स्वयं करण उपयोग करेगा। साथ ही प्रत्येक बेड में ट्राइकोटोमा, पीएसवी, एजोबैक्टेरिया एवं नीम खली स्वयं के स्तर से उपयोग करेगा।

खबरें फटाफट

कला के छात्र 13 नवंबर तक जमा करा सकेंगे अपनी कलाकृतियां

संजीवनी टुडे
जयपुर। राजस्थान ललित कला अकादमी जयपुर की ओर से होने वाली 44वें छात्रकला प्रदर्शनी के लिए अकादमी कार्यालय में कलाकृतियां जमा कराने की अन्तिम तिथि घोषित कर दी गई है। अकादमी कार्यालय में आगामी 13 नवंबर शाम 5 बजे तक कलाकृतियां जमा कराई जा सकती है। इस प्रदर्शनी में प्राप्त कलाकृतियों का चयन निर्णायकमण्डल की ओर से किया जाएगा। समारोह में सर्वश्रेष्ठ 10 कलाकृतियों को 10-10 हजार रूपए के पुरस्कार दिए जाएंगे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शोक संतप्त परिवार को दी सांत्वना

संजीवनी टुडे
जयपुर। पूर्व भाजपा महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय की भतीजी मधु शर्मा के पति श्याम मनोहर शर्मा का लंबे उपचार के बाद राजस्थान हॉस्पिटल जयपुर में गत 16 सितंबर को निधन हो गया। तीये की बैठक कोटा शहर में उनके आवास पर आयोजित की गई। इसमें शहर की कई राजनीति हस्तियां समेत कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने श्याम मनोहर शर्मा के कोटा आवास पर पहुंच कर परिवारजनों को सांत्वना दी एवं अपनी संवेदनाएं व्यक्त की। केंद्रीय मंत्री भगीरथ चौधरी, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़, उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा, विधायक संदीप शर्मा, विधायक एवं पूर्व मंत्री शांति धारीवाल आदि ने भी अपनी संवेदनाएं व्यक्त की हैं। प्रदेश और देश के सभी भाजपा के बड़े नेताओं ने सोशल मीडिया, दूरभाष और पत्र के माध्यम से अपनी संवेदनाएं व्यक्त की।

28 घरेलू गैस सिलेण्डर जब्त

संजीवनी टुडे
द्वारा। राज्य सरकार के निर्देशानुसार एलपीजी घरेलू गैस सिलेण्डर के व्यवसायिक उपयोग के तहत 16 होटल, छावा, रेस्टोरेंट पर कुल 28 घरेलू गैस सिलेण्डर जब्त किए गए। जिला ससद अधिकारी विपिन जैन ने बताया कि जिसके विरुद्ध 6 ए में प्रकरण जिला कलक्टर न्यायालय में प्रस्तुत किए जाएंगे। कार्यवाही सीमलवाड़ा, पीठ, झौंथरी में की गई।

शिल्पग्राम में सफाई अभियान एवं स्वच्छता की ली शपथ

संजीवनी टुडे
उदयपुर। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र की ओर से स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत गुरुवार को शिल्पग्राम परिसर में साफ-सफाई की गई। साथ ही सभी कर्मचारियों, अधिकारियों एवं कलाकारों ने स्वच्छता के प्रति शपथ भी ली। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर के निदेशक फुरकान खान ने बताया कि इसमें केन्द्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत शिल्पग्राम परिसर में साफ-सफाई की गई। साथ ही कलाकारों द्वारा स्वच्छता के संदेश देते हेतु प्रस्तुतियां दीं। सर्वप्रथम लंगा मांगणियार मीटू खां ने स्वच्छता के प्रति जागरूकता हेतु अपनी प्रस्तुति दी। उसके बाद भपंग वादन द्वारा जुमे खां ने स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया। उसके बाद संगीता कारबेलेल्या द्वारा कालबेलिया नृत्य की प्रस्तुति दी गई अंत में गुजरात के प्रसिद्ध डांग नृत्य कमलेश एवं बल द्वारा प्रस्तुत किया गया। इससे पहले उपस्थित सभी कलाकारों, पर्यटकों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा स्वच्छता के प्रति शपथ ली गई।

आर्थिक सहायता स्वीकृत

संजीवनी टुडे
राजसमन्दा। सड़क हादसे में मृतक पुरुषोत्तम उपाध्याय पिता जगदीश चंद्र निवासी केलवा, मृतक पत्नी रेणु उपाध्याय एवं दीनबंधु उपाध्याय पिता जगदीश चंद्र निवासी केलवा को मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा योजना के अंतर्गत मुख्यमंत्री सहायता कोष से मृतक के आश्रितों को दुर्घटना सहायता के रूप में 3 लाख रूपए (1 लाख प्रति व्यक्ति) रूपए की राशि स्वीकृत की गई है।

किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषक विकास योजनाओं व नवाचारों की दी जानकारी

संजीवनी टुडे
उदयपुर। एनएफएल द्वारा कृषि प्रचार प्रसार 2024-2025 वर्ष की गतिविधियों के निर्धारित लक्ष्यों के तहत कृषि विज्ञान केंद्र, बड़गाँव में गुरुवार को एक दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 70 कृषकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्य प्रबंधक एनएफएल राजस्थान के अनुरोध कुमार सक्सेना व केवीके बड़गाँव के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं संस्था प्रमुख डॉ. पी. सी. भटनागर रहे। एनएफएल जयपुर से क्षेत्रीय प्रबंधक अमन कुमार ने मंच का संचालन करते हुए कंपनी के समस्त उत्पादों एवं भविष्य में उर्वरकों के उपलब्धता के बारे में बताया। मुख्य अतिथि सक्सेना ने प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्र के बारे में कृषकों को जानकारी दी। डॉ. भटनागर ने पशुपालन प्रबंधन में तकनीक एवं कुक्युट पालन के बारे में जानकारी दी। तकनीकी सत्र में के.वी.के. से पौध संरक्षण से विषय वस्तु विशेषज्ञ डॉ. दीपक जैन ने किसानों को फसलों में समन्वित कीट प्रबंधन के बारे में बताया।

कश्ती' कर रही शिक्षा, कला, साहित्य व संस्कृति के लिए एक उदात्त पहल

कलाकारों को संबल देने उदयपुर का कश्ती फाउंडेशन बना रहा 'तैराकी' फीचर फिल्म

संजीवनी टुडे
उदयपुर। शहर के ख्यातिप्राप्त उद्योगपति, कश्ती फाउंडेशन के संरक्षक और बालीवुड फिल्मों के निर्माता डॉ. अजय मुंडिया ने कहा है कि हर मेवाड़वासी को प्रकृति द्वारा दी गई नैसर्गिक सौगत के साथ अपने समृद्ध व गौरवमयी इतिहास और अपने पुरखों द्वारा छोड़ी गई सतियों पुरानी धरोहर पर गर्व है। हमारी कला-संस्कृति को संरक्षित करने और उसे देश-दुनिया तक पहुंचाने के काम में इस अंबल के हजारों कलाकार और संस्कृतिप्रिमी जुटे हुए हैं। यद्यपि इन्हीं कलाकारों कलाकारों व साहित्यकारों को संबल प्रदान करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा कई योजनाओं व कार्यक्रमों को चलाया जा रहा है तथापि आज भी मेवाड़-जागड़ के साथ पूरे राज्य में ऐसे कई कलाकार-साहित्यकार हैं जिन्हें उनके कला-कौशल के लिए उचित पहचान प्राप्त नहीं हुई है। ऐसे कलाकारों को पहचानने, उन्हें तराशने और संबल प्रदान करते हुए कला, साहित्य व



संस्कृति संरक्षण की उदात्त पहल करती फाउंडेशन कर रहा है और इसी उद्देश्य से कश्ती फाउंडेशन द्वारा एक फीचर फिल्म 'तैराकी' का निर्माण किया जा रहा है। डॉ. मुंडिया ने गुरुवार को उदयपुर में इंद्रिया इंटरप्राइसेस के सौजन्य से कश्ती फाउंडेशन द्वारा निर्माणाधीन फीचर फिल्म 'तैराकी' के बारे में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान ये जानकारी दी। उन्होंने कहा कि देश और समाज हमें बहुत कुछ देता है, हमारा भी फर्ज है कि हम देश व समाज को कुछ देना सीखें। मेवाड़ व देश के जरूरतमंद कलाकारों को मंच प्रदान करते हुए कश्ती फाउंडेशन इन्हीं प्रयासों को मूर्त रूप दे रहा है। उन्होंने यह भी

बताया कि लेकसिटी ने अब बालीवुड को ओर भी रूख कर लिया है और इंद्रिया इंटरप्राइसेस के बैनर तले बालीवुड फिल्मों के निर्देशक महेश भट्ट और विक्रम भट्ट के साथ चार फिल्मों का निर्माण किया जा रहा है। इसी प्रकार ऐतिहासिक फिल्म रण, वाइल्ड लाइफ थ्रिलर विराट और रोमांटिक फिल्म 'तू ही मेरी पूरी कहानी' आदि शीर्षकों से है। इसके लिए कहानी लेखन, स्टारकास्ट आदि फाइनल की जा चुकी है और निर्माण किया जा रहा है। डॉ. मुंडिया ने गुरुवार को उदयपुर में इंद्रिया इंटरप्राइसेस के सौजन्य से कश्ती फाउंडेशन द्वारा निर्माणाधीन फीचर फिल्म 'तैराकी' के बारे में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान ये जानकारी दी। उन्होंने कहा कि देश और समाज हमें बहुत कुछ देता है, हमारा भी फर्ज है कि हम देश व समाज को कुछ देना सीखें। मेवाड़ व देश के जरूरतमंद कलाकारों को मंच प्रदान करते हुए कश्ती फाउंडेशन इन्हीं प्रयासों को मूर्त रूप दे रहा है। उन्होंने यह भी

की कलाओं को धीरे-धीरे छोड़ रहे हैं और कुछ कलाएं विलुपित के कगार पर आ चुकी हैं। इस प्रकार के कलाकारों को उचित मंच देने की दिशा में कश्ती फाउंडेशन द्वारा जिला मुख्यालय और जिले के कई सरकारी स्कूलों में अलग-अलग गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। मुंडिया ने बताया कि कश्ती फाउंडेशन ने गत दिनों शहर के कलाधर्मियों द्वारा कला सृजन पर संस्था चिंतन, शब्दाभिषेक, शिवम कला प्रदर्शनी, फोटो प्रदर्शनी एवं कार्यशाला, अर्बन स्केचर्स की स्कैचिंग एक्टिविटी, स्कैच प्रदर्शनी, कलारोहण, गुड टच, बेंड टच मुंडिया ने कहा कि मेवाड़ में विलुपित के कगार पर जा रही कलाओं को आज भी सहेजे सैकड़ों कलाकार है परंतु उन्हें न तो अपेक्षित रूप में पहचान मिल पा रहा है और फर्ज है कि हम देश व समाज को कुछ देना सीखें। मेवाड़ व देश के जरूरतमंद कलाकारों को मंच प्रदान करते हुए कश्ती फाउंडेशन इन्हीं प्रयासों को मूर्त रूप दे रहा है। उन्होंने यह भी

रोजगार सहायता शिविर का आयेजन 24 को

संजीवनी टुडे
द्वारा। जिला प्रशासन एवं जिला रोजगार कार्यालय, द्वापुरा के संयुक्त तत्वावधान में 24 सितम्बर मंगलवार को प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक 'रोजगार सहायता शिविर' का आयोजन लक्ष्मण मैदान तहसील चौराहा क्षेत्र की प्रतिष्ठित कम्पनियों द्वारा उनके रिक्त पदों की पूर्ति के लिए साक्षात्कार लिए जाकर मौके पर ही चयन किया जाएगा जिला रोजगार अधिकारी द्वापुरा मंजु माली ने बताया कि मेले में 8वीं, 10वीं, 12वीं एवं स्नातक, आईटीआई योग्यता के इच्छुक बेरोजगार आशार्थी अपने मूल शैक्षणिक योग्यता के प्रमाण पत्र, दो फोटो तथा बायोडेटा के साथ उपरोक्त स्थान पर उपस्थित होंगे। इसके लिए किसी भी प्रकार का मार्ग व्यय देय नहीं होगा। रोजगार मेले में श्री राजस्थान सिस्टेम्स लिमिटेड द्वापुरा, न्यूझील रेनवीयर सागावाड़ा, एसबीआई लाइफ इश्योरेंस, द्वापुरा भारतीय जीवन बीमा निगम द्वापुरा, पीएम इन्टरप्राइजेज, साणद, चैकमेट सर्विस

विश्व के शीर्ष 2 फीसदी वैज्ञानिकों की सूची में कुलपति समेत सीयूजी के 4 वैज्ञानिक

संजीवनी टुडे
स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की सूची में लगातार मिला स्थान

गांधीनगर । अमेरिका के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय और एल्सेवियर द्वारा विश्व के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों की प्रतिष्ठित सूची जारी की गई है। इस प्रतिष्ठित सूची में गुजरात के केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दूबे और विश्वविद्यालय के ही तीन अन्य वैज्ञानिक शामिल हुए हैं। कुलपति प्रो. दूबे ने बताया कि सूची में उन्हें वनस्पतिशास्त्र विषय के अंतर्गत शामिल किया गया है वहीं विश्वविद्यालय के रासायनिक विज्ञान के अधिष्ठाता प्रो. दिनेश कुमार, स्कूल ऑफ नैनो साइंसेज की अधिष्ठाता प्रो. फलवी शर्मा और डॉ. हितेश कुलहरि को भी सूची में स्थान मिला है। यह रैंकिंग शोधकर्ताओं को उनके उच्छ्रेय योगदान के लिए मान्यता देती है, जिसे शोध उत्पादन और उद्घरण प्रभाव के माध्यम से मापा जाता है। प्रो. दिनेश कुमार एवं डॉ. कुलहरि को लगातार चौथे वर्ष भी सूचीबद्ध



किया गया है। इन वैज्ञानिकों का इस प्रतिष्ठित वैश्विक सूची में शामिल होना विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उत्कृष्टता और शोध के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है। शीर्ष वैज्ञानिकों की वार्षिक सूची, जिसे स्टैनफोर्ड द्वारा संकलित किया गया है, मानकीकृत उद्धरण संकेतकों जैसे कि उद्धरण डेटा, एच-इंडेक्स, सह-लेखकता और एक समग्र मेट्रिक के आधार पर होती है।

ई-श्रम कार्डधारियों को मिल रहा है प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना का लाभ

संजीवनी टुडे
राजसमन्दा। श्रम रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की पहचान व उनके पंजीयन के उद्देश्य से ई-श्रम पोर्टल विकसित कर उक्त श्रमिकों को ऑनलाइन पंजीयन की सुविधा देते हुए पंजीकृत श्रमिकों को ई-श्रम कार्ड जारी किया जा रहा है। पंजीयन उपरान्त ई-श्रम कार्ड धारकों को प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना में पात्रता अनुसार एवं विद्यमान दिशा निर्देशों के तहत लाभ दिये जाने के प्रावधान अधिकारि गये हैं। इसी क्रम में श्रम रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पंजीकृत ई-श्रम कार्ड धारकों को प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना का लाभ प्रदान करने हेतु एक्स ग्रेसिया मॉड्यूल विकसित कर उक्त के संबंध में विस्तृत जारी दिशा निर्देश 28 अगस्त जारी किये गये। दिशा निर्देशों के अनुसार ई-श्रम पोर्टल पर पंजीयन पश्चात दिनांक 31 मार्च 2022 को यह इससे पूर्व की घटनाओं के संबंध में ही विचार किये जाने के निर्देश प्राप्त हुए हैं। श्रम कल्याण अधिकारी उमेश रायका ने बताया कि जिले में पंजीकृत ई-श्रम कार्ड धारक जिनके साथ समयविधि में कोई घटना दर्जित हुई है, जिसमें मृत्यु, स्थाई अपंगता करित हुई है, तो स्थितानुसार नामिति/स्वयं द्वारा 31 दिसंबर 2024 तक कार्यालय श्रम कल्याण अधिकारी, राजसमन्दा, कम्पान में 302 जिला कलेक्ट्रेट परिसर राजसमन्दा में कार्यदिवस को निर्धारित भरा हुआ फॉर्म मय मूल दस्तावेज व उनकी प्रति के साथ जमा कराया जा सकता है।

अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने ली बैठक दिए आवश्यक दिशा निर्देश, विशेष योग्यजन अंग उपकरण वितरण शिविर 23 सितंबर

संजीवनी टुडे
सलुंबर। जिला प्रशासन तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विशेष योग्यजन अंग उपकरण वितरण कार्यक्रम 23 सितंबर को दीनदयाल उपाध्याय पार्क सलुंबर में आयोजन किया जाएगा। इसमें 778 अंग उपकरण वितरित किए जाएंगे। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी दिनेश पाटीदार ने गुरुवार को बैठक ले कर संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। कार्यक्रम को लेकर एसीईओ ने कहा कि विशेष योग्यजन से संबंधित कार्यों को संवेदनशील होकर करना चाहिए तथा उन्हें लाभान्वित करने में किसी प्रकार की देरी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कार्यक्रम की सफलता के लिए अलिक्रोक, समाज कल्याण विभाग, आईसीडीएस, सीएमएचओ, परिवहन विभाग तथा समस्त विकास अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जिला समाज कल्याण अधिकारी हेमन्त खटीक ने बताया कि विशेष योग्यजन अंग वितरण कार्यक्रम को लेकर आवश्यक तैयारिया



पूर्ण कर ली गई है और उन्होंने बताया कि इस प्रकार के सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्य करके खुशी महसूस होती है। भविष्य में भी इसी प्रकार समाज कल्याण के कार्यों में आवश्यकतानुसार सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी। अंग उपकरण वितरण कार्यक्रम में 778 अंग उपकरण वितरित किए जाएंगे। प्रत्येक प्रकरण को 3 दिन में निस्तारित करना सुनिश्चित करें। उन्होंने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को निर्देश दिए कि संपर्क पोर्टल के किसी भी स्तर पर परेडेंसी नहीं रखे। संपर्क पोर्टल के प्रकरणों की साप्ताहिक मॉनिटरिंग करें। उन्होंने सभी उपखण्ड अधिकारियों को राज्य, बिजली की समस्याओं को गुस्वार को जिला कलक्टर जसमीत सिंह संधू की तुरंत निस्तारित करने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर जसमीत सिंह संधू ने जसमुनवाई में आए परिवारियों

की समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुना और उनकी बैठकर बारीकी के साथ उनकी पत्रवालियों को देखकर संबंधित विभाग को कार्यवाही कर निस्तारण करने के निर्देश दिए। जसमुनवाई में जिला कलक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि वे समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण समाधान करें। जसमुनवाई में वीसी में जयपुर से मुख्य सचिव श्री सुधांशु पंत ने कहा कि जसमुनवाई में आने वाले परिवारियों को राहत दे और संवेदनशीलता के साथ उनकी समस्या को सून कर समाधान की कार्यवाही करें। जिला कलक्टर जसमीत सिंह संधू, एसीईओ दिनेश चन्द्र पाटीदार, डीओआईटी जीवन राम मीणा, सीएमएचओ डॉ. जेपी बुनकर, कृषि विभाग गौस मोहम्मद, उप निदेशक आईसीडीएस दीपिका मीणा सहित विभिन्न विभागों अधिकारीगण उपस्थित रहे।

कलक्टर पोसवाल के निर्देशन में जिला स्तरीय जनसुनवाई से मिली आमजन को राहत

संजीवनी टुडे
जिला स्तरीय जनसुनवाई का आयोजन

उदयपुर। आमजन की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के उद्देश्य से जिला कलक्टर अरविंद कुमार पोसवाल के निर्देशन में अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रशासन दीपेन्द्र सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में गुरुवार को जिला स्तरीय जनसुनवाई और सतर्कता समिति की बैठक आयोजित हुई। कलेक्ट्रेट स्थित राजस्थान संपर्क आईटी केन्द्र में आयोजित जनसुनवाई में आमजन की समस्याओं के निस्तारण के लिए एडीएम के नेतृत्व में जिला प्रशासन संकल्पबद्ध और संवेदनशील नजर आया। राजस्थान संपर्क पोर्टल, सीएम हेल्पलाइन 181 पर दर्ज परिवारों के निस्तारण के दौरान उदयपुर शहर से लेकर जिले के विभिन्न दूर-दराज के गांवों से आए ग्रामीणों की समस्याओं को एडीएम एवं अन्य आला अधिकारियों ने धैर्यपूर्वक सुना और संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए। लगाभ साढ़े तीन घंटे तक चली जनसुनवाई के दौरान



एडीएम ने विभिन्न विभागों से संबंधित प्रकरणों को सुना और आमजन से जुड़ी समस्याओं के त्वरित निस्तारण के लिए एडीएम ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए।

समस्याओं का शीघ्र निस्तारण हो: एडीएम

जनसुनवाई के दौरान पानी, बिजली, सड़क, अतिक्रमण, अवैध कच्चे, यूआईटी, नगर निगम, चिकित्सा विभाग से जुड़ी समस्याओं के शीघ्र निस्तारण के लिए एडीएम राठौड़ ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए। सहायक निदेशक (लोकसेवा) ने

ये अधिकारी रहे उपस्थित

जनसुनवाई के दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर (शहर) राजीव द्विवेदी, युडीए ओएसडी जितेंद्र ओझा सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे, जबकि जिले के सभी उपखंड कार्यालयों के अधिकारी वीसी के माध्यम से शामिल हुए।

निष्पक्ष सटीक खबरें हो ताकि विश्वसनीयता बनी रहे: श्रवणसिंह राव

आईएफडब्ल्यूजे पत्रकार संगठन का अंगीकृत हुआ कार्यक्रम: जिले भर से बड़ी संख्या में पहुँचे पत्रकार

संजीवनी टुडे
भीनमाल। इंडियन फ़ेडरेशन ऑफ़ वर्किंग जर्नालिस्ट (आईएफडब्ल्यूजे) पत्रकार संगठन का जिला स्तरीय सम्मेलन गुरुवार को भीनमाल में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में जिले भर के पत्रकारों ने भाग लिया। सर्व प्रथम अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती व क्षेमकरी माता की तस्वीर पर दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भीनमाल विधायक डॉ. समरजित सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में निष्पक्ष एवं सटीक खबरें समाज के सामने लाई जाए ताकि लोगों में खबरों के प्रति विश्वसनीयता बनी रहे। उन्होंने कहा कि एक समय था जब चाय की शुरुआत अखबार के साथ होती थी लेकिन अब सुबह की शुरुआत मोबाइल के साथ होने लगी है और खबरे भी मोबाइल पर मिल जाती है। डॉ. सिंह ने कहा कि पत्रकारों के सुरक्षा कानून को लेकर आज उठाएंगे। कार्यक्रम में रानीवाड़ा विधायक रतन देवासी ने कहा कि पुराने समय में संधा में एक अखबार आता था और युग बदल गया है। अब तकनीक आ गई और पत्रकारिता की व्यवस्था भी बदली है। उन्होंने कहा कि पत्रकारों की भी स्वयं का मूल्यांकन करना आवश्यक है। रानीवाड़ा के पूर्व विधायक नारायणसिंह देवल ने कहा कि पत्रकार जनता की



आयोजन होने चाहिए ताकि आपस में समन्वय बना रहे। भाजपा जिलाध्यक्ष श्रवणसिंह राव ने कहा कि वर्तमान में न्याय की बड़ी महती आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को भी स्वयं का मूल्यांकन करना आवश्यक है। रानीवाड़ा के पूर्व विधायक नारायणसिंह देवल ने कहा कि पत्रकार जनता की

समस्या को सामने लाते हैं और वो बात सरकारी तक पहुँच जाते हैं हम जनप्रतिनिधियों का भी दायित्व है कि उस पर अमल कर समाधान कराए। भाजपा प्रदेश मंत्री सांबलाराम देवासी ने कहा कि वर्तमान पत्रकारिता न्याय पूर्ण हो पत्रकारों की विश्वसनीयता बनी रहनी चाहिए। कांग्रेस जिलाध्यक्ष भवरलाल

मेघवाल ने कहा कि प्रशासन एक आईना है और जो समस्या पत्रकार अपनी लेखनी से सामने लाते हैं प्रशासन उसका समाधान कर कार्यवाई करता है जिससे पीड़ित को न्याय मिलता है। उन्होंने कहा कि देश की आजादी को निष्पक्ष पत्रकारिता की बाट कही। कार्यक्रम के अंत में संगठन के प्रदेशध्यक्ष उपेन्द्रसिंह राठौड़ ने कहा कि आज के कार्यक्रम में सब जाह से एक ही आवाज आई कि वर्तमान समय में निष्पक्षता जरूरी है। उन्होंने कहा कि आईएफडब्ल्यूजे पत्रकार संगठन पत्रकारों के लिए हमेशा आगे खड़ा है। उन्होंने पत्रकार सुरक्षा कानून बने इसके लिए जनप्रतिनिधियों को आवाज उठाने की बात कही। वरिष्ठ पत्रकार कन्हैलाल खडेलवाल ने कहा पत्रकारिता का परिदृश्य बदलता जा रहा है आज का मीडिया एडवांस हो गया है। कार्यक्रम को अतिरिक्त जिला कलेक्टर दौलत राम चौधरी जिलाध्यक्ष दिलीपसिंह बालावात, रानीवाड़ा ब्लॉक अध्यक्ष गुमान सिंह राव, ईश्वर सेन ने भी संबोधित किया।

अनुकरणीय कार्य पर संगठन ने किया सम्मानित कार्यक्रम में कई ऐसे विशेष लोगों को भी सम्मानित किया गया जो सार्वजनिक जीवन में अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं। जिसमें रानीवाड़ा के धामसोनी निवासी विधवा महिला पार्वती देवी ने विपरीत परिस्थितियों में अपनी बच्चियों को पढ़ाकर आगे पढ़ाया और खेल में नेशनल स्तर पर पहुँचाया। निवेश भटनागर, यूथ फ्रंट नेशन संस्था के सदस्य द्वारा रक्तदान में अग्रणी रहने पर व उनके मीठालाल सुदेशा, सैयद खान को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन योगेंद्र सिंह कुम्मावत ने किया। इस दौरान नराराम पटेल, संगठन ब्लॉक अध्यक्ष परबत सिंह राव, संयुक्त व्यापार महासंघ अध्यक्ष नरेश अग्रवाल, जयकरणा खिलेरी, ओम प्रकाश माहेश्वरी, भाजपा नेता जोरावर सिंह राव, विक्रमसिंह आर्य, भाजपा नगर अध्यक्ष महेन्द्र सोलंकी, किशोर सांखला, नगर पालिका प्रिपक्ष नेता प्रवीण दवे, रमेश सोनी पुनासा, वरिष्ठ पत्रकार थान म्लो लोहार, संगठन महासचिव प्रवीण सोलंकी, आहोर ब्लॉक अध्यक्ष रघुवीर सिंह, सायला कलक अध्यक्ष मुकेश वैष्णव, ईश्वर खत्री, ईश्वर सेन, मानकमल भंडारी, होलाल भट्टी, उत्तम गोस्वामी, ललित हौडा आदि बड़ी संख्या में पत्रकार मौजूद रहे।

मधुमेह रोगियों को लेना चाहिए योग का सहारा



पश्चिमोत्तानासन- इस आसन से शरीर का पाचनत्रंज मजबूत होता है और शरीर में रक्त का संचार तेजी से होता है, जिससे व्यक्ति को डायबिटीज से लड़ने में आसानी होती है। यह आसन करने के लिए पैर सीधे फैलाकर बैठ जाएं। फिर दोनों हाथों को ऊपर उठाएं और सांस भरते हुए पैरों के तलवे को पकड़ने की कोशिश करें। घुटने से माथा सटना चाहिए। फिर सांस छोड़ते हुए हाथ ऊपर करके सामान्य हो जाएं। इस प्रक्रिया को दो से तीन बार दोहराएं।

सर्वांगासन: यह शरीर का संपूर्ण व्यायाम है। इसे करने से थायरॉइड और पैराथायराइड ग्रंथियों को मजबूती मिलती है। इसे करने के पहले सीधे लेट जाएं, फिर पैरों को धीरे-धीरे उठाते हुए 90 डिग्री का कोण बनाएं। हाथों से कमर को सहारा दें। इस आसन में शरीर का सारा भार गर्दन पर पड़ना चाहिए। पैरों को सीधा रखें।

अर्ध मत्स्येन्द्रासन: यह आसन यकृत व मूत्राशय को सक्रिय बनाता है। जिन लोगों के शरीर के भीतर इंसुलिन का उत्पादन नहीं होता या जिन्हें मधुमेह की बीमारी होती है, यह अभ्यास उनके शरीर में अग्न्याशय को सक्रिय बनाकर इंसुलिन के उत्पादन में सहयोग देता है, इसलिए यह मधुमेह के उपचार के लिए रामबाण दवा है। इस आसन को करने के लिए सबसे पहले सामने की ओर दोनों पैरों को फैलाकर बैठ जाएं। अब दाहिने पैर को मोड़ते हुए बाएं घुटने के बगल में बाहर की ओर रखें। इसके बाद बाएं को दाहिने ओर मोड़िए। एड़ी दाहिने नितम्ब के पास रखें। बाएं हाथ को दाहिने पैर के बाहर की ओर रखते हुए दाहिने पैर के टखने या अंगूठे को पकड़ें। दाहिना हाथ पीछे की ओर कमर में लपेटते हुए शरीर को दाहिनी ओर मोड़ें। अंतिम अवस्था में पीठ को अधिक से अधिक मोड़ने की कोशिश करें। एक मिनट इस अवस्था में रूकने के बाद धीरे-धीरे सामान्य अवस्था में आ जाएं। अब इसी क्रिया को

विपरीत दिशा में करें। गर्भावस्था के दौरान व हथ रोगियों को यह आसन नहीं करना चाहिए।

प्राणायाम: प्राणायाम मधुमेह के रोगियों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। खासतौर से, ध्रामरी और भ्रमिका प्राणायाम तो डायबिटिक लोगों को जरूर करना चाहिए। इनके नियमित अभ्यास से स्ट्रेस लेवल कम होता है और शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है। ध्रामरी प्राणायाम करने के लिए पद्मासन में बैठ जाएं। अंगूठे से कान बंद करें और ऊपर की तीन उंगलियों को आंखों पर रखें। अब गहरी सांस लेते हुए गले से उच्चारण करें। भ्रमिका प्राणायाम के लिए पद्मासन में बैठ जाएं। गहरी सांस लें और उसे जल्दी-जल्दी छोड़ें। इस प्रक्रिया में मुंह बंद रखें और सांस की सारी प्रक्रिया नाक से ही करें।

सूर्य नमस्कार: अगर आपके पास सभी आसनों को करने का पूरा समय नहीं है तो रोज दो से तीन बार सूर्य नमस्कार अवश्य करें। सिर्फ इस आसन को करने से भी आप काफी हद तक इस रोग को नियंत्रित कर सकेंगे। इससे श्वास, पेट और प्रतिरोधी क्षमता को लाभ पहुंचता है।

इन बातों का रखें ख्याल

अगर आप योग द्वारा मधुमेह का उपचार कर रही हैं तो कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखें। सर्वप्रथम हमेशा खाली पेट ही योग क्रिया करें। साथ ही ढीले, हल्के व आरामदायक वस्त्र पहनकर ही योग करें। ऐसा जरूरी नहीं है कि आप सभी योगासन करें लेकिन जो भी करें, उसे सही ढंग से करें। साथ ही इसे चंद दिनों की चांदनी न बनाएं बल्कि जीवपर्यन्त हमेशा करने की आदत डालिए। योगासन के अतिरिक्त अगर संभव हो तो सप्ताह में एक दिन नेती क्रिया या कुंजल क्रिया अवश्य करें। इन क्रियाओं को शुरूआत में किसी विशेषज्ञ की देख-रेख में ही करें।

हेल्थ संवाददाता

भारत में आज लगभग हर घर में आपको कोई न कोई मधुमेह का रोगी मिल ही जाएगा। वैसे तो आमतौर पर लोग इस बीमारी को कोई खास तवज्जो नहीं देते लेकिन एक बार इस बीमारी की जद में आ जाने के बाद इससे छुटकारा पाना बेहद मुश्किल हो जाता है। साथ ही यह एक ऐसी बीमारी है कि जिसके बाद मनुष्य को बहुत सी चीजों से किनारा करना पड़ता है। इतना ही नहीं,

कुछ समय पहले तक जहां यह एक उम्र के बाद ही लोगों को अपनी चपेट में लेता था, वहीं गलत खान-पान व जीवनशैली के कारण वर्तमान में कम उम्र के लोग भी इससे पीड़ित हो रहे हैं। ऐसे में यह बेहद आवश्यक है कि कुछ ऐसे उपाय किए जाएं, जिससे आपका शुगर कंट्रोल में रहे। मधुमेह को नियंत्रित रखने में योग आपके काफी काम आ सकता है। तो आईए जानते हैं मधुमेह को कंट्रोल करने वाले कुछ योगासनों के बारे में-

‘पपीते का रस वाकई है डेंगी की कारगर दवा’



डेंगी के मरीजों को पपीते के पत्ते से फायदा होता है या नहीं अभी इस पर सवालिया निशान हैं, लेकिन श्रीलंकाई वैज्ञानिकों की रिसर्च को ब्रिटिश मेडिकल जर्नल ने पब्लिश कर इसके यूज करने के तरीके पर गाइडलाइन जारी की है। जर्नल की इस स्टडी के अनुसार, पपीते के पत्ते

से डेंगी के मरीजों में बुखार के पहले दिन से ही फायदा होता है। साथ ही, यह भी कहा गया है कि अभी तक जितनी भी स्टडी हुई है, किसी में इसके साइड इफेक्ट की बात सामने नहीं आई है। लेकिन, अभी तक न तो डब्ल्यूएचओ ने इसे रिकमंड किया है और न ही नैशनल गाइडलाइन में इसे शामिल किया गया है। इस रिसर्च पेपर का हवाला देते हुए गंगाराम अस्पताल के डॉक्टर प्रत्युष कुमार ने कहा कि पपीते के पत्ते के कई फायदे बताए गए हैं, जैसे- यह डेंगी फीवर के ड्यूरेशन को कम करता है, अस्पताल में मरीज के ठहराव को कम करता है, बाँड़ी से फ्ल्यूड लीक नहीं होने देता और वाइट ब्लड सेल्स और प्लेटलेट्स की संख्या को बढ़ाता है। डॉक्टर ने बताया कि इस स्टडी में यह भी कहा गया है कि बुखार कन्फर्म होने के पहले दिन से ही पपीते के पत्ते का रस दिया जा सकता है। हालांकि, यह रस कभी भी इस्तेमाल किया जा सकता है, क्योंकि अभी तक इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं देखा गया है। रिसर्च पेपर में कहा गया है कि अगर किसी को डेंगी पकड़ में आया है तो उसे तुरंत एलोपैथिक डॉक्टर से इलाज शुरू कराना चाहिए और पपीते के पत्ते का इस्तेमाल अलग से डेंगी मैनेजमेंट के लिए किया जा सकता है। पत्ते का जूस कभी भी किसी भी स्टेज में दिया जा सकता है। लेकिन, बुखार आने के पहले दिन से देने पर इसका फायदा बहुत ज्यादा होता है। इसमें कहा गया है कि यह जूस एक अडल्ट को 30 एमएल दिन में तीन बार दिया जाना चाहिए और बच्चों को 5 से 10 एमएल दिन में तीन बार दें। हालांकि इसमें यह भी कहा गया है कि जूस पीने के बाद एक घूंट पानी पी सकते हैं, ताकि इसका कड़वा टेस्ट खत्म हो जाए।

ऐसे तैयार करें पपीते का जूस

इस गाइडलाइन में जूस बनाने का तरीका भी बताया गया है। इसके मुताबिक सबसे पहले हेल्दी और फ्रेश पपीते के पत्ते को लें। इसे अच्छी तरह से धो लें और चॉप कर दें, इसके बाद 50 ग्राम पत्ते लें, इसमें 50 एमएल पानी (पानी गर्म करके ठंडा कर लें) और 25 ग्राम चीनी मिलाएं। इसे 15 मिनट तक मिक्स करें। मिक्स होने के बाद इसे 30 मिनट तक छोड़ दें, इसके बाद इससे जूस निकाल लें। जूस निकालने के लिए हाथों का ही यूज करें। इसके बाद यह जूस डेंगू मरीज को पिलाएं। एक बार तैयार किए गए जूस को 24 घंटे तक फ्रिज में रख सकते हैं।

दिव्य औषधीय गुणों से भरपूर है करेला

हेल्थ संवाददाता

लेटिन में मॉर्डिका तथा अंग्रेजी में बिटर गॉर्ड के नाम से पुकारा जाने वाला करेला बेल पर लगने वाली सब्जी है। इसका रंग हरा होता है इसकी सतह पर उमरे हुए दाने होते हैं। इसके अंदर बीज होते हैं। यह अपने स्वाद के कारण काफी प्रसिद्ध है। इसका स्वाद बहुत कड़वा होता है इसलिए प्रायः कड़ुवे (बुरे) स्वभाव वाले व्यक्ति की तुलना करेले से कर दी जाती है। एक अच्छी सब्जी होने के साथ-साथ करेले में दिव्य औषधीय गुण भी होते हैं। यह दो प्रकार का होता है बड़ा तथा छोटा करेला। बड़ा करेला गर्मियों के मौसम में पैदा होता है जबकि छोटा करेला बरसात के मौसम में। चूँकि इसका स्वाद बहुत कड़वा होता है इसलिए अधिकांश लोग इसकी सब्जी को पसंद नहीं करते। इसके कड़वपन को दूर करने के लिए इसे नमक लगाकर कुछ समय तक रखा जाता है।



बुखार में कारगर है करेला

बड़े हुए यकृत, प्लीहा तथा मलेरिया बुखार में यह बहुत फायदेमंद सिद्ध होता है। इसके लिए रोगी को करेले के पत्तों या कच्चे करेले को पीसकर पानी में मिलाकर पिलाया जाता है। यह इस दिन में कम से कम तीन बार पिलाना चाहिए। कच्चा करेला पीसकर पिलाने से पीलिया भी ठीक हो जाता है। रस निकालने से पहले पत्तों या करेले को ठीक से राड़कर धोना जरूरी होता है क्योंकि आजकल फल सब्जियों को रोगों तथा कीड़ों से बचाने के लिए अनेक रसायन छिड़के जाते हैं जो हमारे शरीर के लिए हानिकारक होते हैं। जोड़ों के दर्द तथा गठिया रोग में करेले की सब्जी बिना कड़ुवापन दूर किए दिन में तीनों समय अर्थात सुबह नाशते में और फिर दोपहर तथा रात्रि के भोजन में खाई जानी चाहिए। फोडे-फुन्सी तथा रक्त विकार में करेले का रस

लाभकारी होता है। इन पर करेले के पत्तों का लेप भी किया जा सकता है। करेले का रस निकालते समय यह ध्यान रखें कि यह बहुत ज्यादा पतला न हो और उसे साफ बर्तन में निकाला जाए।

कुष्ठरोग में करेला है रामबाण

त्वचीय रोग, कुष्ठ रोग तथा बवासीर में करेले को मिक्सी में पीसकर प्रभावित स्थान पर हल्के-हल्के हाथों से लेप लगाया चाहिए। यह लेप नियमित रूप से रात को सोने से पहले लगाएं। जब तक इच्छित लाभ न हो लेप लगाया जारी रखना चाहिए। करेले के रस की एक चम्मच मात्रा में शकर मिलाकर पीने से खूनी बवासीर में लाभ होता है। यह शरीर में उत्पन्न टॉक्सिन्स तथा उपस्थित अनावश्यक वसा को दूर करता है अतः यह मोटापा दूर करने में भी विशेष रूप से सहायक होता है।

जिस स्त्री को मासिक स्राव बहुत कठिन तथा दर्द भरा हो तो उसे भी करेले के रस का सेवन करना चाहिए। इसका सेवन गर्भवती स्त्रियों में दूध की मात्रा भी बढ़ाता है।

करेला में पोषक तत्व

करेले की तासीर ठंडी होती है। यह पचने में हल्का होता है। यह शरीर में वायु को बढ़ाकर पाचन क्रिया को प्रदीप्त कर, पेट साफ करता है। प्रति 100 ग्राम करेले में लगभग 92 ग्राम नमी होती है। साथ ही इसमें लगभग 4 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 1.5 ग्राम प्रोटीन, 20 मिलीग्राम कैल्शियम, 70 मिलीग्राम फास्फोरस, 1.8 मिलीग्राम आयरन तथा बहुत थोड़ी मात्रा में वसा भी होता है। इसमें विटामिन ए तथा विटामिन सी भी होता है जिनकी मात्रा प्रति 100 ग्राम में क्रमशः 126 मिलीग्राम तथा 88 मिलीग्राम होती है।

आयुर्वेद में हैं स्मरण शक्ति बढ़ाने वाली कई जड़ी बूटियाँ

स्मरण शक्ति का हमारे जीवन में क्या महत्व है इससे हम सभी परिचित हैं। दरअसल स्मरण शक्ति ही हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करती है। अच्छी स्मरण शक्ति जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होती है। रोजमर्रा के जीवन में भी अनेक कार्य ऐसे होते हैं जो हम अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर ही करते हैं। यदि यही स्मरण शक्ति क्षीण हो जाए तो निश्चय ही हम स्वयं को असहाय स्थिति में पाएंगे। तनाव एक ऐसा कारक है जो स्मरण शक्ति को कमजोर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रायः तनावग्रस्त व्यक्ति ही तथ्यों को ठीक से याद नहीं रख पाते इसके अतिरिक्त गहरी दिमागी चोट, कोई घातक रोग या किसी शोक में पड़ने के कारण भी स्मरण शक्ति कमजोर पड़ जाती है। नशीले पदार्थों का ज्यादा मात्रा में लगातार सेवन करने से भी स्मरण शक्ति क्षीण होने लगती है। स्मरण शक्ति का प्रभाव उम्र से भी संबंधित होता है किशोरावस्था तथा नौजवानी में स्मरण शक्ति तेज होती है। बढ़ती उम्र के साथ-साथ स्मरण शक्ति भी घटती जाती है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के लिए अच्छी स्मरण शक्ति का खासा महत्व है इसलिए अच्छी स्मरण शक्ति की नींव बचपन से ही डाली जानी चाहिए। यदि बचपन से ही इस बात का ख्याल रखा जाए कि बच्चे की स्मरण शक्ति तेज हो तो आगे चलकर वह कुशाग्र बुद्धि वाला बनता है। आयुर्वेद में अनेक ऐसी जड़ी-बूटियाँ हैं जिनका प्रयोग स्मरण शक्ति को तेज करने के लिए प्राचीन काल से ही किया जा रहा है। एक से तीन वर्ष तक के बच्चों को ब्राह्मी तथा शंखपुष्पी का शरबत नियमित रूप से देना चाहिए। इनके प्रयोग से बच्चे हट्ट-पुष्ट तथा कुशाग्र बुद्धि वाले बनते हैं। इसके अतिरिक्त बेल का शरबत भी मस्तिष्क को पुष्ट करता है। ब्राह्मी का शरबत बनाने के लिए 50 ग्राम ब्राह्मी के पत्ते लेकर कैंची से काटकर साफ कर लें बाद में उसे पीस कर उबालें जब तक कि अधिकांश पानी वाष्पित न हो जाए। जब यह पानी केवल 250 ग्राम रह जाए तो उसमें लगभग 500 ग्राम चीनी डालकर दो तार की चाशनी होने तक पका लें। इसी प्रकार शंखपुष्पी का शरबत भी बनाया जा सकता है। शंखपुष्पी के फूल बाजार में आसानी से मिल जाते हैं। देखने में ये शंख जैसे लगते हैं। तीन वर्ष तक के बच्चों को इस शरबत की एक चम्मच मात्रा सुबह और इतनी ही मात्रा शाम को दी जा सकती है। इससे बच्चों के व्यक्तित्व का समग्र विकास होता है। आंवले, गाजर तथा सेब के मुरब्बे को एक साथ मिक्सी में पीसकर चटनी बना लें। बाद में इस चटनी में 5-5 ग्राम ब्राह्मी, शंखपुष्पी तथा जटामांसी का चूर्ण मिला लें। लगभग 10 ग्राम छोटी इलायची भी पीस कर इसमें मिला लें। इस चटनी को किसी साफ-सुधरे मर्तबान में संग्रहित कर लें। तीन से आठ वर्ष तक के बच्चों को यह चटनी दिन में तीन बार सुबह, दोपहर तथा शाम को आधी से एक चम्मच दें। इससे बच्चों की स्मरण शक्ति बढ़ती है। आठ से बीस वर्ष तक के बच्चों को एक अवलेह दिया जा सकता है। जिससे स्मरण शक्ति तेज होती है। इस अवलेह को बनाने के लिए कागजी बादाम की गिरी, अखरोट की गिरी, कच्चे चिलगोजे की 100-100 ग्राम मात्रा तथा 100 ग्राम चारों मगज (खरबूजा, तरबूज, खीरा तथा घीया) को मिलाकर आंवले का पिसा हुआ मुरब्बा मिला लें। बाद में इस मिश्रण में ब्राह्मी शंख पुष्पी तथा जटामांसी का 10-10 ग्राम चूर्ण तथा छोटी इलायची को 20 ग्राम चूर्ण मिला लें। इस अवलेह को साफ मर्तबान में भरकर रखें। इस मिश्रण की एक-एक चम्मच मात्रा सुबह-शाम लें। इसे गुनगुने दूध के साथ ही लिया जा सकता है। इसके सेवन से स्मरण शक्ति तो दुरुस्त रहती है साथ ही यह हृदय, नेत्र तथा दांतों को भी पुष्ट करता है। बच्चों को भोजन के बाद मौसम के अनुसार यदि गाजर, घीया या फूल मखाने की खीर दी जाए तो इससे भी शरीर एवं मस्तिष्क स्वस्थ रहता है। कमलगट्टे के हलुए का सेवन सभी उम्र के लोग कर सकते हैं। मस्तिष्क के लिए यह अमृत के समान होता है। इसे बनाने के लिए कमलगट्टे के बीज निकालकर उसका छिलका उतार लें। इसका हरा भाग हटा दें। इसे पीसकर शुद्ध घी में गुलाबी होने तक भून लें बाद में इसमें चीनी तथा पिप्पी इलायची मिला लें। यह हलुआ शरीर को निरोग बनाए रखने में भी मदद देता है।

15 नवंबर को रिलीज होगी 'द साबरमती रिपोर्ट' ...

नई दिल्ली। विक्रान्त मैसी इन दिनों अपनी फिल्म सेक्टर 36 की वजह से चर्चा में हैं। हाल ही में नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई इस फिल्म में उनके किरदार ने लोगों को हैरान करके रख दिया है। इस फिल्म के बाद वह जल्द ही द साबरमती रिपोर्ट नाम की फिल्म में नजर आने वाले हैं। हाल ही में इस फिल्म को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। कई बार स्थगित होने के बाद अब आखिरकार द साबरमती रिपोर्ट को नई रिलीज डेट मिल गई है। गुरुवार को विक्रान्त ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट से फिल्म का एक नया पोस्टर जारी करते हुए रिलीज की तारीख से भी पर्दा उठा दिया। इस पोस्टर के मुताबिक उनकी यह फिल्म 15 नवंबर को सिनेमाघरों में दस्तक देगी।

लाइफ Style

सैयामी

आयरनमैन 70.3 रेस को किया पूरा

एजेसी मुंबई

'घूमर' में भी पैराप्लेजिक किरदार की अपनी भूमिका से सभी का दिल जीता। अब कई महीनों के गहन प्रशिक्षण के बाद आयरनमैन ट्रायथलॉन 2024 को सैयामी खेर ने सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। सैयामी ने बर्लिन में आयरनमैन दौड़ में भाग लिया था। सैयामी ने 15 सितंबर को आयोजित आयरनमैन 70.3 रेस को पूरा कर लिया है। इस ट्रायथलॉन में दौड़, तैराकी, साइकिलिंग शामिल होता है। इन सभी को मिलाकर कुल 113 किमी दूरी तय करनी होती है। बता दें सैयामी इसके लिए काफी दिनों से मेहनत कर रही थीं। सैयामी फिल्मों की शूटिंग के साथ समय निकालकर इस ड्रीम को पूरा करने की जीतोड़ कोशिश करती रहीं। आखिरकार, उनकी मेहनत रंग लाई और उन्होंने ये मुकाम हासिल कर लिया। सैयामी ऐसी पहली भारतीय अभिनेत्री हैं, जिन्होंने जर्मनी की राजधानी बर्लिन में आयरनमैन 70.3 को पूरा किया है। सैयामी के अलावा, आयरनमैन ट्रायथलॉन में भाग लेने वाले एकमात्र बॉलीवुड सेलिब्रिटी मिलिंद सोमन हैं। सैयामी ने इंस्टाग्राम पर एक तस्वीर साझा की और लिखा, 'आयरनमैन 70.3 फिनिशर यह कुछ रोमांचकारी था, कड़ाके की ठंड और रास्ते में रास्ता भटक जाना!



हॉलीवुड मसाला

भारत में होगा कोल्डप्ले का आयोजन



लॉस एंजिल्स। भारत में संगीत प्रेमियों के लिए खुशखबरी है कि ब्रिटिश रॉक बैंड कोल्डप्ले 2025 में अपना म्यूजिक ऑफ द स्पेयर वर्ल्ड टूर भारत में साल 2025 में लेकर आ रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, कोल्डप्ले 2022 से दुनिया भर के देशों को आकर्षित कर चुके हैं। इस बार साल 2025 में कोल्डप्ले का मुंबई में एक बहुप्रतीक्षित संगीत कार्यक्रम का आयोजन होगा। यह शो भारत के मुंबई शहर के डीवाइड पार्क स्टेडियम में 18 और 19 जनवरी साल 2025 को आयोजित किया जाएगा। इस शो की टिकट आप 22 सितंबर से बुक करा सकते हैं।

मैं बहुत ही घमंडी और नकचड़ी थीं...

मुंबई। अनुष्का शर्मा का एक पुराना इंटरव्यू सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें वो कुबूल करती नजर आ रही हैं कि एक्ट्रेस बनने से पहले काफी घमंडी थीं। अनुष्का ने 20 साल की उम्र में आदित्य चोपड़ा की साल 2008 की रोमांटिक कॉमेडी फिल्म 'रब ने बना दी जोड़ी' से बॉलीवुड में एंट्री मारी, जिसमें उन्हें पहली बार में ही शाहरुख खान के ऑपोजिट काम करने का मौका मिला। एक्ट्रेस ने बताया कि वो स्कूल और कॉलेज के दिनों में बेहद नकचड़ी थीं और एक्ट्रेस बनने से पहले 'खुबसूरती का काफी घमंड था, जिसे आदित्य ने तोड़ दिया। अनुष्का ने 'हेडलाइंस टुडे' के साथ बातचीत में कहा था कि उन्हें ये लगता था कि वो सबसे सुंदर लड़की हैं। खुद पर उनका ये अभिमान तब टूटकर चकनाचूर हो गया जब वो आदित्य से उनकी डेब्यू फिल्म 'रब ने बना दी जोड़ी' के लिए मिलीं।



अब 'वेट्टेयन' के साथ नहीं मिड़ेगी कंगुवा

नई दिल्ली। साउथ सुपरस्टार सूर्या की 'कंगुवा' इस साल की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है, जिसकी रिलीज का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। यह फिल्म पहले 10 अक्टूबर को रिलीज होने वाली थी। अब यह फिल्म 14 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म के निर्माताओं ने एक्स अकाउंट पर पोस्ट साझा करते हुए इसका ऐलान किया है। फिल्म का प्रचार जल्द शुरू होने की उम्मीद है। एक रिपोर्ट के अनुसार रजनीकांत की फिल्म 'वेट्टेयन' 10 अक्टूबर को रिलीज होने वाली है। 'कंगुवा' को इस साल की सबसे बड़ी और सबसे महंगी फिल्म माना जा रहा है। 350 करोड़ रुपये से ज्यादा के अनुमानित बजट के साथ यह 'पुष्पा', 'सिंघम' और कई अन्य बड़ी फिल्मों से बड़ी होने का दावा कर रही है।

'बैटमैन' के सितारे 'हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम' पर होंगे प्रदर्शित...

लॉस एंजिल्स। 'बैटमैन' के प्रशंसकों के लिए खुशखबरी है। अब डीसी के प्रतिष्ठित सुपरहीरो 'बैटमैन' को 'हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम' पर प्रदर्शित किया जाएगा। ऐसा करके 'बैटमैन' स्टार वाला सुपरहीरो बनकर इतिहास रचने के लिए तैयार है। बिलबोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार, बैटमैन का सितारा 26 सितंबर को हॉलीवुड गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स म्यूजियम के सामने 6764 हॉलीवुड बुलेवार्ड पर दिखाई देगा। आधिकारिक गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के निष्पादक माइकल रमफिक ने 'बैटमैन' की इतिहास रचने वाली उपलब्धि को प्रमाणित करने के लिए वहां मौजूद रहेंगे। हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम की निर्माता एन मार्टिनेज ने अपडेट साझा करते हुए कहा, 'हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम' को हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम पर हमारे पहले सुपरहीरो को सम्मानित करने पर गर्व है। डीसी कॉमिक्स के लिए बॉब केन और बिल फिगर द्वारा बनाया गया 'बैटमैन' पहली बार साल 1939 की डिस्ट्रिब्यूट कॉमिक्स हैशटैग 27 में दिखाई दिया था।



टीवी मसाला



बिग बॉस देखेंगे घरवालों का प्यूपर नए सीजन में होगा टाइम का तांडव

नई दिल्ली। टीवी का सबसे कंट्रोवर्शियल शो एक बार फिर वापस आ रहा है। बिग बॉस का सीजन 18 आने वाला है और एक बार फिर आपको टीवी पर लड़ाई झगड़े हल्ला-गुल्ला देखने को मिलने वाला है। पूरे साल लोग बिग बॉस के नए सीजन का इंतजार करते हैं। अब बस कुछ ही दिनों में अठारहवां सीजन शुरू हो जाएगा। इस बार के बिग बॉस की थीम कुछ और ही है। जिसके बारे में सलमान खान ने प्रोमो में हिंट दे दी है। प्रोमो देखने के बाद लग रहा है कि कुल मिलाकर एक बार फिर घरवालों की क्लास बिग बॉस लगाते हुए नजर आएंगे। कलर्स टीवी ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर प्रोमो शेयर किया है। जिसमें सलमान खान की आवाज सुनाई दे रही है और बिग बॉस की आंख टाइम में घूमती नजर आ रही है। सलमान खान कहते हैं- 'बिग बॉस देखेंगे घरवालों का प्यूपर, अब होगा टाइम का तांडव।' पोस्टर शेयर करते हुए लिखा- 'होगी एंटरटेनमेंट की पूरी विश्व जब टाइम का तांडव लेकर आएंगे बिग बॉस में एक नया ट्विस्ट। क्या आप सीजन 18 के लिए तैयार हैं?'

'हनीमून फोटोग्राफर' का ट्रेलर रिलीज

नई दिल्ली। आशा नेगी की नई सीरीज 'हनीमून फोटोग्राफर' का ट्रेलर रिलीज होते ही चर्चा में छा गया है। यह एक मर्डर मिस्ट्री थ्रिलर सीरीज है, जो 27 सितंबर को जियो सिनेमा पर स्ट्रीम की जाएगी। टीवी सीरियल्स में गर्ल नेक्स्ट डोर वाले रोल करने वाली एक्ट्रेस आशा नेगी अब एक नई वेब सीरीज में नजर आएंगी, जोकि एक रिंगटे खड़े कर देने वाली मर्डर मिस्ट्री है। इस सीरीज का नाम 'हनीमून फोटोग्राफर' है, जिसका ट्रेलर रिलीज कर दिया गया है। हाल ही में मकर्स ने इसका ट्रेलर रिलीज किया, जिसे देख फैंस भी हैरान रह गए। आशा नेगी एकदम अलग और चौकाने वाले अवतार में नजर आ रही हैं। 'हनीमून फोटोग्राफर' की कहानी में तब ट्विस्ट आता है, जब हनीमून के लिए गया एक दूल्हा बीच पर मरा पाया जाता है। इससे सनसनी मच जाती है।



सीरीज में आशा नेगी ने अंबिका नाथ का किरदार निभाया है, जो न्यूली वेड बिजनेसमैन अधीर और जोया इंगानी के लिए हनीमून की तस्वीरें लेती हैं। जब समंदर के किनारे अधीर की लाश मिलती है, तो तहलका मच जाता है। चूंकि, अंबिका को याद नहीं आता कि पिछली रात क्या हुआ था, इसलिए अब वह इस मर्डर के मुख्य संदिग्ध है, क्योंकि जिस शख्स को वह डेट करती थी, यानी रिहान, वह गायब है। 'हनीमून फोटोग्राफर' में राजीव सिद्धार्थ ने रिहान का किरदार निभाया है, जबकि जेसन थाम ने एल्चिन का रोल प्ले किया है। वह भी शिल्पा शेट्टी काफ़ी स्टनिंग लुक में एयरपोर्ट पर स्पॉट हुईं। एक्ट्रेस इस दौरान बेज कलर का पैट सूट पहने काफ़ी स्टाइलिश लग रही थीं। शिल्पा ने आंखों पर काला चश्मा लगाया हुआ था और निगलिन नेकअप किया हुआ था। एक्ट्रेस खुली जूल्फों में बला की हसीन लग रही थीं। उसने अपने एयरपोर्ट लुक को ब्लैक कलर के हेडबैंग और हाई हिल्स के साथ कंप्लेंट किया था।

शिल्पा खुली जूल्फों में लग रही थीं बला की हसीन

मुंबई। शिल्पा शेट्टी के हर अंदाज के फैंस दीवाने हैं। एक्ट्रेस अपने स्टाइलिश लुक से हमेशा डिजलिया गिराती रहती हैं। फिलहाल शिल्पा को एयरपोर्ट से लेटेस्ट तस्वीरें वायरल हो रही हैं। शिल्पा शेट्टी बॉलीवुड की फिटनेस क्वीन हैं। एक्ट्रेस काफ़ी स्टाइलिश भी हैं और



'ताल' 25 साल बाद हो रही है रि-रिलीज...

मुंबई। ऐश्वर्या राय की सुपरहिट फिल्म 'ताल' 25 साल बाद रि-रिलीज हो रही है। हाल ही इस फिल्म ने सिल्वर जुबली मनाई और इसे रिलिबेट करने के लिए 'ताल' को थिएटर में दोबारा 21 सितंबर को रि-रिलीज किया जा रहा है। साल 1999 में रिलीज हुई 'ताल' में अमिताभ कपूर, ऐश्वर्या राय और अक्षय खन्ना नजर आए थे। पिछले कुछ समय से थिएटर में पुरानी और वतासिक हिट फिल्मों को दोबारा रिलीज किया जा रहा है। ऐसा इसलिए ताकि दर्शक थिएटर में वापसी करें और उन्हें भी फायदा हो। अब तक रहना है तेरे दिल में, लैला मजनु, लव आजकल, रॉकस्टार, पॉर्टलर राजा बाबू और तुम्हारा जैसी फिल्में थिएटर में रि-रिलीज हो चुकी हैं। अब नया नाम फिल्म 'ताल' का जुड़ा है। 'ताल' ने 1999 में की थी इतनी कमाई: यह फिल्म तब थिएटर में 70 दिनों तक चली थी। इसने तब यानी 1999 में बॉक्स ऑफिस पर देशभर में 22.16 करोड़ और वर्ल्डवाइड 50.07 करोड़ रुपये कमाए थे। अभी तक जितनी भी पुरानी फिल्में दोबारा रिलीज हुई हैं, उन सभी ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की है। दर्शकों का भी अच्छा रिसांप्स मिला है। इसमें उम्मीद है कि 'ताल' भी अच्छी कमाई कर सकती है। 'ताल' को सिर्फ थिएटर में ही नहीं, बल्कि ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 पर भी देख सकते हैं।



35 साल पहले रिलीज हुई वो फिल्म, जिसने पार लगाई थी यशराज फिल्म की डूबती नैया

नई दिल्ली। 35 साल पहले बॉलीवुड की एक फिल्म रिलीज की गई थी, जिसने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी खासी कमाई की थी। इसने यशराज फिल्म की डूबती नैया को बचा लिया था। इसे सबसे टुकड़ा दिया था लेकिन, बाजी श्रीदेवी ने मार ली थी। 90 के दशक में एक से बढ़कर एक फिल्मों को रिलीज किया गया था, जिसने बॉक्स ऑफिस पर कमाल का प्रदर्शन किया। इन मूवीज को आज भी याद किया जाता है फिर चाहे वो 'वीर जारा' हो या फिर 'दिल तो पागल' है। इसमें कई फिल्में रही हैं, जिनका निर्माण यश राज के प्रोडरान के बैनर तले किया गया। यश चोपड़ा ने अपने करियर में कई बेहतरीन फिल्मों में काम किया। इसी में से एक 'चांदनी' भी थी, जिसने यशराज फिल्म की डूबती नैया को बचाया था। इसमें एक्ट्रेस श्रीदेवी ने अर्ध कपूर के साथ लीड रोल प्ले किया था। फिल्म के गाने तक खूब पॉपुलर हुए थे।



बदरखल, फिल्म 'चांदनी' की रिलीज को 35 साल पूरे हो गए हैं। फिल्म को 14 सितंबर, 1989 को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था। मूवी ने उस साल ताड़तोड़ कलेक्शन किया। फिल्म ने अपनी कमाई के आंकड़ों से हैरान कर दिया था। उस समय 8-10 करोड़ कमाना बहुत बड़ी बात होती थी। ये फिल्म यश चोपड़ा के लिए एक नई शुरुआत लेकर आई थी। इसके बाद उन्होंने आदित्य चोपड़ा के साथ कई हिट फिल्मों में काम किया था। इसलिए कहा जाता है कि 'चांदनी' ने यश चोपड़ा की डूबती नैया बचाई थी।

श्रीदेवी ने अपनी शर्तों पर किया काम : 90 के दशक की हिट फिल्म 'चांदनी' के लिए मेकर्स की पहली पसंद श्रीदेवी नहीं थीं। इसके लिए पहले रेखा को अप्रोच किया गया था। लेकिन, किन्हीं कारणों की वजह से उन्होंने इसे करने से मना कर दिया। इसके बाद ये जूही चावला और माधुरी दीक्षित जैसी एक्ट्रेस को भी ऑफर हुई लेकिन, उन्होंने भी इसे टुकड़ा दिया था, जिसका बाद फिल्म श्रीदेवी की झोली में आ गिरा। यश चोपड़ा ने अपने इंटरव्यू में शाहरुख खान से एक बात और शेयर की थी, जो कि फिल्म 'चांदनी' में श्रीदेवी से ही जुड़ी थी। उन्होंने बताया था कि श्रीदेवी इस फिल्म को करने के लिए मना तो गई थी लेकिन, उन्होंने शर्त रखी थी कि अगर ये फिल्म हिट होगी तो ही वो इसके लिए फीस लेगी, वरना काम फ्री में करेंगी। हालांकि, फिल्म हिट रही और श्रीदेवी की हिंदी सिनेमा की पहली महिला सुपरस्टार के रूप में पहचान मिली।

राजकुमार की टुकड़ाई फिल्म ने बदली धर्मेद्र की किस्मत...

नई दिल्ली। सदाबहार फिल्म पाकीजा, सौदगर, तिरंगा और नील कमल में अपने अभिनय का दम दिखाने वाले बॉलीवुड के स्टायल किंग कहे जाने वाले एक्टर राज कुमार अपने अनोखे और हटके अंदाज के लिए जाने जाते थे गले पर हाथ मलते हुए राज कुमार जब 'जानी...' कहते तो थियेटर तालियों से गूंज उठता था। राज कुमार अपनी स्टाइल के साथ ही अपने बड़बोलेपन और हाजिर जवाबी के लिए भी मशहूर थे। वह अपनी हाजिर जवाबी से बड़े बड़ों का मुंह बंद कर देते थे ऐसे तो उनके जुड़े कई किस्से हैं, लेकिन निर्माता-निर्देशक रामानंद सागर के साथ उनका किस्सा ऐसा है जिसे जान उनके फैंस हैरान रह जाएंगे। इस सुपरहिट फिल्म को कर दिया रिजेक्ट : साल 1968 में आई फिल्म आंखें धर्मेद्र के करियर की सफल फिल्मों में शामिल है, लेकिन इस फिल्म लिए पहले रामानंद सागर अपने दोस्त राज कुमार को साइन करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने फिल्म की कहानी भी राज कुमार को सुनाई, लेकिन शायद उन्हें फिल्म की स्क्रिप्ट कुछ कुमार अपनी स्टाइल के साथ ही अपने बड़बोलेपन और हाजिर जवाबी के लिए भी मशहूर थे। वह अपनी हाजिर जवाबी से बड़े बड़ों का मुंह बंद कर देते थे ऐसे तो उनके जुड़े कई किस्से हैं, लेकिन निर्माता-निर्देशक रामानंद सागर के साथ उनका किस्सा ऐसा है जिसे जान उनके फैंस हैरान रह जाएंगे।



'मिले जब हम तुम' के इस पॉपुलर कपल ने सच में की थी शादी...

नई दिल्ली। स्टार वन के सुपरहिट सीरियल 'मिले जब हम तुम' में सनाया इरानी और मोहित सहगल लीड कपल थे। इनका अफेयर वहीं शुरू हुआ और 2016 में इन्होंने शादी कर ली थी। साथ में उनका अफेयर भी वहीं से शुरू हुआ और बाद में ये रियल लाइफ कपल बन गए। 11 सितंबर 1983 को मुंबई में जन्मी सनाया इरानी इस साल अपना 40वां बर्थडे मना रही हैं। पिछले 16 सालों से सनाया इरानी और मोहित सहगल साथ हैं, वहीं 8 साल पहले इन्होंने शादी की थी।



स्वर संक्षेप

जोमैटो से 17.7 करोड़ रुपए की जीएसटी मांग



नई दिल्ली। खानपान के सामान की आपूर्ति करने वाले ऑनलाइन मंच जोमैटो ने कहा कि उसे पश्चिम बंगाल के सहायक राज्य आयुक्त से 17.7 करोड़ रुपये की जीएसटी मांग और जुर्माने का आदेश मिला है। यह आदेश ऑर्डर पर लिए जाने वाले आपूर्ति शुल्क पर जीएसटी न चुकाने और उस राशि पर ब्याज एवं जुर्माने से संबंधित है।

पूर्वा ग्रीन ने पवन ऊर्जा के लिए किया इकोरेन से समझौता



नई दिल्ली। सीईएससी की शाखा पूर्वा ग्रीन पावर प्राइवेट लिमिटेड ने 686.85 मेगावाट तक की पवन ऊर्जा परियोजना स्थापित करने के लिए इकोरेन एनर्जी इंडिया के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। सीईएससी लिमिटेड ने शेर बाजार को दी सूचना में बताया, इकोरेन एनर्जी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड न तो संबंधित पक्ष है और न ही इसके प्रवर्तक या प्रवर्तक समूह का हिस्सा है।

जिंदल उत्पादन बढ़ाने 1500 करोड़ रुपए का कोरेगी निवेश



नई दिल्ली। बीसी जिंदल समूह की कंपनी जिंदल इंडिया लि. अपनी वार्षिक उत्पादन क्षमता को बढ़ाकर 16 लाख टन करने के लिए 1,500 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। 'कलर कोटेड' और 'गैलवेनाइज्ड' इस्पात की चादरें, पाइप और एलुमिनियम फॉइल बनाने वाली कंपनी ने बयान में कहा कि विस्तार के तहत कोटिंग वाले 'फ्लैट' उत्पादों, पाइप और क्रेश बैरियर के उत्पादन पर ध्यान दिया जाएगा।

चालू वित्त वर्ष में प्रत्यक्ष कर संग्रह 16 प्रतिशत बढ़ा



नई दिल्ली। चालू वित्त वर्ष 2024-25 में 17 सितंबर तक शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 16.12 प्रतिशत बढ़कर 9.95 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा है। ज़ारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, चालू वित्त वर्ष में अबतक 2.05 लाख करोड़ रुपये से अधिक के रिफंड जारी किए गए हैं, जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की तुलना में 56.49 प्रतिशत अधिक है।

पावर फाइनेंस ने सरकार को 462 करोड़ का लाभांश दिया



नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए भारत सरकार को 462 करोड़ रुपये का अंतिम लाभांश दिया है। कंपनी ने कहा कि पीएफसी ने सरकार को 462 करोड़ रुपये और अन्य शेरधारकों को 363 करोड़ रुपये का भुगतान किया, जो 2023-24 के लिए अंतिम लाभांश के रूप में कुल 825 करोड़ रुपये है।

पंत ने टेकजॉकी डॉट कॉम में 2% हिस्सेदारी हासिल की



नई दिल्ली। क्रिकेटर ऋषभ पंत ने ऑनलाइन सॉफ्टवेयर मार्केटप्लेस टेकजॉकी डॉट कॉम में 7.40 करोड़ रुपये में दो प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल की है। कंपनी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। आकाश नांगिया ने अर्जुन मित्तल के साथ 2017 में टेकजॉकी डॉट कॉम की स्थापना की थी। यह ऐप समूचे भारत में सॉफ्टवेयर विक्रेताओं को छोटे व्यवसायों से जोड़ती है। नांगिया ने बयान में कहा कि 370 करोड़ रुपये के मूल्यांकन पर ताजा पूंजी जुटाई गई, जिसमें पंत ने सौदे के तहत कंपनी में दो प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल की है।

निवेशकों को बोनस शेयर के लिए अब नहीं करना होगा 15 दिन तक लंबा इंतजार

एजेसी ►► नई दिल्ली

बाजार नियामक सेबी ने बोनस शेयरों के क्रेडिट और उनकी ट्रेडिंग के बीच का समय घटा दिया है। अब सभी बोनस शेयर रिफंड डेट के दो दिन बाद ट्रेडिंग के लिए उपलब्ध होंगे। पहले, ये शेयर रिफंड डेट के लगभग दो सप्ताह बाद ट्रेडिंग के लिए आते थे। यह नया नियम 1 अक्टूबर से लागू होगा, और रिफंड डेट को ट्रेडिंग दिवस माना जाएगा। सेबी ने निर्देश दिया है कि बोनस शेयर जारी करने वाली कंपनियों को अपने बोर्ड की मंजूरी के पांच कार्यदिवसों के भीतर स्टॉक एक्सचेंजों से सैद्धांतिक मंजूरी के लिए आवेदन करना होगा।

सेबी ने जारी किया सर्कुलर, नया नियम 1 अक्टूबर से लागू होगा

देरी पर सेबी जुर्माना लगाएगी

रिफंड डेट वह कटऑफ तारीख होती है, जिस पर यह तय होता है कि कौन से शेयरधारक बोनस शेयरों के हकदार होंगे। 16 सितंबर को जारी सर्कुलर में सेबी ने बताया कि बोनस शेयरों को टी+2 ट्रेडिंग को सक्षम कर दिया गया है, जहां टी का अर्थ रिफंड डेट है। सर्कुलर में प्रक्रिया से संबंधित विवरण दिए गए हैं, और इसमें यह भी कहा गया है कि किसी भी प्रकार की देरी पर सेबी द्वारा जुर्माना लगाया जाएगा।



बोनस शेयर क्या होते हैं?

बोनस शेयर वे अतिरिक्त शेयर होते हैं जो कंपनी अपने निवेशकों को मुफ्त में प्रदान करती है। जैसे कंपनियां अपने कर्मचारियों को बोनस देती हैं, वैसे ही लिस्टेड कंपनियां अपने निवेशकों को मुफ्त शेयर देती हैं। कंपनी यह निर्णय करती है कि वह कितने बोनस शेयर जारी करेगी।

अब यह होगी प्रक्रिया

बोनस इश्यू प्रस्ताव: जिस दिन कंपनी का बोर्ड बोनस इश्यू को मंजूरी देता है, उस तारीख से पांच कार्यदिवसों के भीतर उसे स्टॉक एक्सचेंज में सेबी (लौडर) रेगुलेशन 2015 के तहत सैद्धांतिक मंजूरी के लिए आवेदन करना होगा।
रिफंड डेट तय करना: सेबी के नियमानुसार, कंपनी को रिफंड डेट तय करके स्टॉक एक्सचेंज को सूचित करना होगा। रिफंड डेट के अगले दिन (टी+1 डे) को अलॉटमेंट डेट माना जाएगा।
डिपॉजिटरी में शेयर जमा: कंपनी रिफंड डेट के अगले कार्यदिवस (टी+1 डे) को दोपहर 12 बजे तक बोनस शेयर डिपॉजिटरी सिस्टम में जमा करेगी।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के पहले कटौती पर कुछ नहीं कहा जा सकता

कच्चे तेल में उतार-चढ़ाव से पेट्रोल डीजल कीमतों में कटौती 'अटकी'

एजेसी ►► नई दिल्ली

वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड वायदा पिछले सप्ताह 70 डॉलर प्रति बैरल से नीचे आ गया, जो दिसंबर, 2021 के बाद का सबसे निचला स्तर था। लेकिन बाद में इसका भाव फिर से चढ़ गया। बृहस्पतिवार को ब्रेंट 74.58 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा था। कच्चे तेल को रिफाइनरी में पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधन में बदला जाता है। ऐसे में कच्चे तेल के दाम गिरने से ईंधनों की कीमतों में कटौती की भी उम्मीदें बढ़ने लगती हैं। लेकिन अभी तक ऐसा हुआ नहीं है। पेट्रोल और डीजल की कीमतें इस साल की शुरुआत में चुनाव-पूर्व कटौती को छोड़कर अब दो साल से अधिक समय से स्थिर बनी हुई हैं।

पेट्रोलियम मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने अपना नाम सामने न आने की शर्त पर कहा, "कच्चे तेल की कीमतों में काफी उतार-चढ़ाव देखा जा रहा है। कीमतें एक दिन 70 डॉलर प्रति बैरल से नीचे आ गईं, लेकिन उसके बाद फिर से बढ़ गई हैं।"

कच्चे तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में काफी उतार-चढ़ाव रहने की वजह से पेट्रोल एवं डीजल की घरेलू कीमतों में लागत घटने के बावजूद कोई कटौती नहीं हो पा रही है। पेट्रोलियम मंत्रालय के अधिकारी ने कहा कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के पहले भी कीमतों में कटौती के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता है।

तीनों पीएसयू कंपनियों गुनाफा कम आ रही

अधिकारी ने कहा कि कच्चे तेल का उतार-चढ़ाव बने रहने तक इस बात की संभावना कम ही है कि सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनियां अपनी लागत के अनुरूप कीमतों में संशोधन करें। सार्वजनिक क्षेत्र की तीनों ईंधन खुदरा विक्रेता कंपनियों लंबे समय से पेट्रोल और डीजल पर अछा गुनाफा कम रही हैं, लेकिन उनकी कीमतों में कटौती का फैसला करने से पहले वे कीमतों में सुधार की प्रवृत्ति सुनिश्चित करना चाहती हैं।

क्रूड वायदा पिछले सप्ताह 70 डॉलर प्रति बैरल से नीचे आया



भारत जरूरत का 85 फीसदी करता है आयात

भारत अपनी पेट्रोलियम जरूरतों का 85 प्रतिशत आयात करता है और इसका ईंधन मूल्य निर्यात अंतरराष्ट्रीय दरों के हिसाब से होता है। राष्ट्रीय राजधानी में पेट्रोल की कीमत 94.72 रुपये प्रति लीटर है जबकि डीजल का भाव 87.62 रुपये प्रति लीटर है।

अप्रैल 2022 में कीमतें स्थिर कर दिए गए थे

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (आईओसी), भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) ने 2021 के बाद से ही लगातार अनुरूप कीमत संशोधन नहीं किए हैं। पेट्रोलियम कंपनियों ने अप्रैल, 2022 में सुकरा कीमतों को स्थिर कर दिया था।

आम चुनाव के समय की गई थी कटौती

इस दौरान शिफ्ट एक बार आम चुनाव, 2024 के पहले पेट्रोल और डीजल में दो-दो रुपये प्रति लीटर की कटौती की गई थी। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव से पहले पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कटौती की संभावना के बारे में पूछे जाने पर इस अधिकारी ने कोई स्पष्ट जवाब देने में असमर्थता जताई।

अमेरिका में ब्याज दर घटने से सेंसेक्स 237 अंक चढ़कर सर्वकालिक उच्चस्तर पर



एजेसी ►► मुंबई

स्थानीय शेयर बाजारों में बृहस्पतिवार को तेजी रही और दोनों मानक सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी ने नये शिखर को छू लिया। अमेरिकी फेडरल रिजर्व के चार साल से अधिक समय बाद नीतिगत दर में कटौती के बीच सकारात्मक वैश्विक रुख से घरेलू बाजार को समर्थन मिला। तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 236.57 अंक के साथ अपने अबतक के उच्चतम स्तर 83,184.80 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी भी 38.25 अंक के लाभ के साथ 25,415.80 अंक पर बंद हुआ। दिन में कारोबार के दौरान यह 234.4 अंक की बढ़त के साथ अपने अबतक के उच्चतम स्तर 25,611.95 अंक तक चला गया था। मार्केट्स मोजो के समूह सीईओ (मुख्य कार्यपालक अधिकारी) अमित गोविला ने कहा, "नीतिगत दर में कटौती की उम्मीद में घरेलू बाजार में निफ्टी पिछले 10 दिन में 2.1 प्रतिशत चढ़ा है। हालांकि, आज बाजार गतिविधियां लगातार स्थिर रहीं।"

एनटीपीएस रहा लाम में

सेंसेक्स में सूचीबद्ध 30 कंपनियों में से एनटीपी सी. नेस्ले, टाइटन, कोटक महिंद्रा बैंक, माइक्रो, हिंदुस्तान यूनिफ़ॉर्म, भारतीय एयरटेल और एचडीएफसी बैंक के शेयर सबसे ज्यादा लाभ में रहे।

टीसीएस में रहा नुकसान

दूसरी तरफ, नुकसान में रहने वाले शेयरों में एचबीएल टेक्नोलॉजीज, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, आदानी पोर्ट्स, लार्सन एंड टुबो, जेएसडब्ल्यू स्टील, भारतीय स्टेट बैंक, टेक महिंद्रा और बजाज फाइनेंस शामिल हैं।

भारत को विकसित करने बैंकों को निभानी होगी महत्वपूर्ण भूमिका

पुणे। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र या 'विकसित भारत' बनाने के एजेंडे को आगे बढ़ाने में बैंकिंग क्षेत्र को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। सीतारमण ने बैंक ऑफ महाराष्ट्र के 90वें स्थापना दिवस पर यहां आयोजित एक कार्यक्रम में कहा, "प्रधानमंत्री की तरफ से निर्धारित एजेंडे को आगे बढ़ाने में बैंकों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी और आपकी भूमिका से हम इस सपने को हासिल करने में और तेजी लाएंगे। वित्त मंत्री ने कहा कि बैंकों को बुनियादी ढांचा क्षेत्र को सशक्त रफ्तार देने, एमएसएमई क्षेत्र को जरूरत के हिसाब से वित्त मुहैया कराने, बैंक सेवाओं से वंचित आबादी को बैंक दायरे



में लाने और बीमा पहुंच बढ़ाने में मदद करनी होगी। सीतारमण ने कहा कि प्रौद्योगिकी बैंक परिदृश्य को तेजी से बदल रही है क्योंकि यह सभी ग्राहकों को सुरक्षित एवं आसानी से संचालित किया जा सकने वाला डिजिटल बैंकिंग अनुभव देती है।

ओसवाल पंप्स का आईपीओ के लिए दस्तावेज जमा

नई दिल्ली। हरियाणा स्थित ओसवाल पंप्स ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम के जरिये धन जुटाने के लिए पूंजी बाजार नियामक सेबी के पास शुरुआती दस्तावेज दाखिल किए हैं। मंगलवार को दाखिल किए गए दस्तावेजों के मसौदे के अनुसार, यह आईपीओ, 1,000 करोड़ रुपये मूल्य के इक्विटी शेयरों के नए निर्गम और प्रवर्तक विवेक गुप्ता द्वारा 1.13 करोड़ इक्विटी शेयरों की बिक्री पेशकश (ओएफएस) का संयोजन है। कंपनी आईपीओ पूर्व नियोजन से 200 करोड़ रुपये तक जुटाने पर विचार कर सकती है। यदि ऐसा होता है, तो नए निर्गम का आकार कम हो जाएगा।

एमएसपी पर समिति की रिपोर्ट होगी जल्द सार्वजनिक : चौहान

एजेसी ►► नई दिल्ली

कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बृहस्पतिवार को घोषणा की कि सरकार फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर बनी समिति की रिपोर्ट जल्द ही सार्वजनिक करेगी। इस समिति का गठन तीन विवादस्पद कृषि कानूनों को वापस लेने के बाद किया गया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नीत सरकार के तीसरे कार्यकाल के पहले 100 दिन की उपलब्धियों का ब्योरा देने के लिए आयोजित सम्मेलन में चौहान ने कृषि के आधुनिकीकरण तथा किसानों की सहभागिता में सुधार



को हासिल करने में और तेजी लाएंगे। वित्त मंत्री ने कहा कि बैंकों को बुनियादी ढांचा क्षेत्र को सशक्त रफ्तार देने, एमएसएमई क्षेत्र को जरूरत के हिसाब से वित्त मुहैया कराने, बैंक सेवाओं से वंचित आबादी को बैंक दायरे में लाने और बीमा पहुंच बढ़ाने में मदद करनी होगी। सीतारमण ने कहा कि प्रौद्योगिकी बैंक परिदृश्य को तेजी से बदल रही है क्योंकि यह सभी ग्राहकों को सुरक्षित एवं आसानी से संचालित किया जा सकने वाला डिजिटल बैंकिंग अनुभव देती है।

ब्रिटेन के केंद्रीय बैंक ने ब्याज दर को स्थिर रखा

लंदन। ब्रिटेन के केंद्रीय बैंक ने नीतिगत दर कटौती से बेअसर रहते हुए बृहस्पतिवार को अपनी नीतिगत ब्याज दर को पांच प्रतिशत पर बरकरार रखा।



बैंक ऑफ इंग्लैंड की मौद्रिक नीति समिति ने नीतिगत दर में कोई बदलाव नहीं करने का फैसला किया। मुद्रास्फीति के अब भी ऊंचे स्तर पर रहने की वजह से ब्याज दर में बदलाव होने की संभावना पहले से ही कम जताई जा रही थी। बुधवार को आए आंकड़ों से पता चला कि अगस्त में ब्रिटेन में मुद्रास्फीति 2.2 प्रतिशत की वार्षिक दर पर स्थिर रही जो अब भी बैंक के निर्धारित लक्ष्य से ऊपर है।

दरअसल, ब्रिटेन के सेवा क्षेत्र में मुद्रास्फीति का स्तर काफी अधिक है जो इसकी अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर डाल रहा है। सेवा क्षेत्र की ब्रिटिश अर्थव्यवस्था में करीब 80 प्रतिशत हिस्सेदारी है। बैंक ऑफ इंग्लैंड ने कोविड-19 महामारी के बाद पिछले महीने पहली बार नीतिगत दरों में कटौती की थी। माना जा रहा है कि नवंबर में होने वाली अगली बैठक में ब्रिटिश केंद्रीय बैंक फिर से दर घटा सकता है।

एजेसी ►► नई दिल्ली

सरकार देश में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की गणना के लिए आधार वर्ष को 2011-12 से बदलकर 2022-23 करने पर विचार कर रही है। सूत्रों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। यह एक दशक से अधिक समय में पहला संशोधन होगा। आखिरी संशोधन वित्त वर्ष 2011-12 में किया गया था। सूत्रों ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था की सटीक तस्वीर पेश करने के लिए आधार वर्ष को बदलकर 2022-23 करने पर विचार किया जा रहा है। इस संबंध में सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की तरफ से राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी सलाहकार समिति (एसीएनएस) को सुझाव दिया जा सकता है।

यह एक दशक से अधिक समय में पहला संशोधन होगा

गणना में सुधार देखने मिलेगा

सूत्रों के मुताबिक, जीडीपी की गणना में इस्तेमाल की जाने वाली दरों और अनुपात को अद्यतन करने के लिए कई अध्ययन किए गए हैं और इससे गणना में सुधार देखने को मिलेगा। सरकार अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्रों की बेहतर और सटीक तस्वीर को सामने लाने के लिए सांख्यिकीय प्रणाली में सुधार के कई उपाय कर रही है।



नई गणना में लालटेन, वीसीआर, रिफॉर्डर हटा

सूत्रों ने कहा कि नई गणना में लालटेन, वीसीआर, रिफॉर्डर जैसे कुछ वस्तुओं को हटा दिया जाएगा और स्मार्ट घड़ियों, फोन और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों जैसे नए उत्पादों को शामिल जाएगा। इसके अलावा नए स्रोत के तौर पर जीएसटी आंकड़ों को भी रखा जा सकता है।

फरवरी 2026 में जारी होगा नए आधार वर्ष का अनुमान

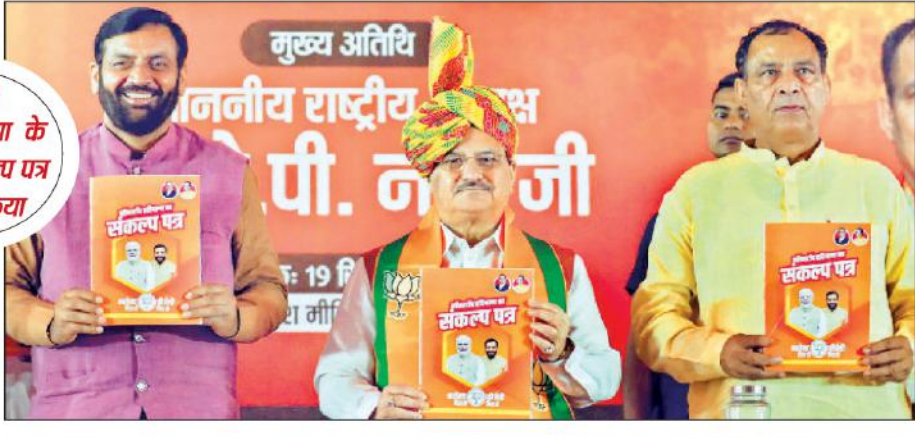
सूत्रों के मुताबिक, विश्वनाथ गोल्टर की अध्यक्षता में गठित 26 सदस्यीय सलाहकार समिति इस काम को वर्ष 2026 की शुरुआत तक पूरा कर सकती है। सूत्रों ने कहा कि जीडीपी के आकलन के लिए नए आधार वर्ष के अनुमान फरवरी, 2026 में जारी किए जाने की संभावना है।
एसएनएस के सामने रखे जायें आंकड़े
गोल्टर ने कहा, "राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी से असंगठित क्षेत्र उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण, घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण जैसे प्रमुख आंकड़ों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय वर्ष 2022-23 को अगले आधार के रूप में एसएनएस के समक्ष रखेगा।"

महिलाओं को हर माह 2100 रुपये और गरीबों को 5 लाख आवास देंगे

▶▶रोहतक

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने गुरुवार को रोहतक से हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर पार्टी का घोषणा पत्र जारी किया।

इस दौरान प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सैनी, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, प्रदेश प्रभारी सतीश पुनिया, हरियाणा चुनाव प्रभारी धर्मप्र प्रधान, पूर्व मंत्री रामबिलास शर्मा, केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर, केंद्रीय राज्य मंत्री राव इंद्रजीत सिंह, कुलदीप बिस्नोई आमप्रकाश धनखड़, सुभाष बराला, सुधा यादव, अशोक तंवर भी पहुंचे हैं।



नड्डा ने हरियाणा के लिए संकल्प पत्र जारी किया

पहले हरियाणा जमीनों के घोटाले के लिए जाना जाता था

नड्डा ने कहा कि मुझे ये सौभाग्य मिला है, हरियाणा की पवित्र भूमि से विधानसभा चुनाव के लिए संकल्प पत्र जारी करने का मौका मिला है। मैं सबसे पहले यह बताना चाहता हूँ कि हरियाणा की छवि 10 साल पहले क्या थी? पहले हरियाणा में नौकरी के लिए पर्वी और खर्ची चलती थी। नौकरी के कारण लोगों को सजाए तक हुई। हरियाणा जमीनों के घोटाले के लिए जाना जाता था।

- हरियाणा का संकल्प पत्र**
- 1. सभी महिलाओं को लाडो लक्ष्मी योजना के तहत प्रतिमाह 2100 रुपये
 - 2. 10 औद्योगिक शहरों का निर्माण। प्रति शहर 50,000 स्थानीय युवाओं को नौकरी देने उद्यमियों को विशेष प्रोत्साहन
 - 3. चतुष्टय परिवार को 10 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज एवं परिवार के 70 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों को अलग से 5 लाख तक के मुफ्त इलाज की सुविधा
 - 4. 24 फसलों की घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद
 - 5. 2 लाख युवाओं को 'बिना पर्वी बिना खर्ची' पकड़ी सरकारी नौकरी
 - 6. 5 लाख युवाओं के लिए अन्य रोजगार के अवसर एवं नेशनल अप्रेंटिसशिप प्रमोशन योजना से मासिक प्रशिक्षण को वृद्धि
 - 7. शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में 5 लाख आवास
 - 8. सरकारी अस्पतालों में डायग्नोसिस तथा सभी अस्पतालों में डायग्नोसिस मुफ्त
 - 9. हर जिले में ओलंपिक खेलों की नर्सरी
 - 10. हर घर गृहणी योजना तहत 500 रुपये में सिलेंडर
 - 11. ग्रामीण क्षेत्र में कॉलेज जाने वाली प्रत्येक छात्रा को स्कूटर
 - 12. हर हरियाणवी अभिनेत्री को सरकारी नौकरी
 - 13. केएमपी के ऑब्जिक्ट रेल कोरिडोर का निर्माण एवं नई वंदे भारत ट्रेनों की शुरुआत
 - 14. विभिन्न रैंपिड रेल सेवाओं एवं फरीदाबाद से गुरुग्राम के बीच हरिद्वार एक्सप्रेस मेट्रो सेवा की शुरुआत
 - 15. छोटी पिछड़े समाज की जातियों (36 बिरादरियों) के लिए पर्याप्त बजट के साथ अलग-अलग कल्याण बोर्ड
 - 16. डीए और पेशनों को जोड़ने वाले साइडिफिक फॉर्मूले के आधार पर सभी सामाजिक मासिक पेशनों में वृद्धि
 - 17. मेडिकल और इंजीनियरिंग पढ़ने वाले ओबीसी एवं एससी जातियों के हरियाणा के विद्यार्थियों को पूर्ण छात्रवृत्ति

सरकार ने 10 सालों में पूरे किए वादे : प्रदेशाध्यक्ष बड़ौली

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मोहन बड़ौली ने कहा कि 2014 और 2019 में जो संकल्प पत्र भाजपा ने जारी किया था, उसके सभी वादे सरकार ने 10 सालों में पूरे किए हैं। जिस प्रकार केंद्र में मोदी जी की सरकार बनी है, वैसे ही हरियाणा में भी भाजपा की सरकार बनेगी। इसके साथ ही मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने अपने संबोधन में हरियाणा में भाजपा सरकार बनने का दावा किया है।

खबर संक्षेप

एन 2 कोरियोग्राफर जानी हुए गिरफ्तार

नई दिल्ली। हेमा कपटो की रिपोर्ट सामने आने के बाद से मलयालम फिल्म इंडस्ट्री हिली हुई है। कई एक्ट्रेस ने अपने साथ हुए यौन शोषण पर खुलकर बोला है। अब जाने माने तेलुगू कोरियोग्राफर शेख जानी बाशा (जानी मास्टर) पर एक यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था साइबरबाद स्पेशल ऑपरेशंस टीम ने गुरुवार को गोवा में गिरफ्तार कर लिया है।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की नक्सलियों को सलाह हथियार छोड़कर आत्मसमर्पण करो, मूलधारा में शामिल हो... नहीं तो बड़े ऑपरेशन को तैयार रहो

▶▶नई दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्री ने दिल्ली स्थित अपने आवास पर बस्तर के घने जंगलों से पहली बार दिल्ली आये 70 नक्सल पीड़ितों के दल के साथ उनकी व्यथा को उनके मुंह से सुना। उन्होंने देवता तुल्य आदिवासियों से कहा, हमारे घर में बहुत सारे महापुरुष पधारे मगर आप लोगों को निज निवास पर आमंत्रित करना भरे लिए सबसे अनमोल क्षण है।

उन्होंने एक बार फिर दोहराया कि नक्सलवाद को साल, डेढ़ साल में हमारी सरकार पूरी तरह खत्म करने को लेकर दृढ़ प्रतिज्ञ है, इसलिए जैसे कश्मीर में लोग हथियार छोड़ कर मूलधारा में शामिल हो रहे हैं वहां शांति स्थापित हो रही है वैसे ही नक्सली भी हथियार छोड़ें, कानून का साथ दें, मूलधारा में शामिल हों। शाह ने मौके पर मौजूद छत्तीसगढ़ के सीएम विष्णुदेव साय के कामकाज की सराहना करते हुए आदिवासी परिवारों से कहा, राज्य और केंद्र की सरकार मिलकर नक्सली गतिविधि छोड़कर कानून का साथ देने वाले सभी भाई, बहनों के पुनर्वास में सहायता उपलब्ध कराया जाएगा। लगभग 70 नक्सल पीड़ितों के दल ने शाह से अपनी व्यथा साझा की और न्याय व पुनर्वास की मांग की। नेतृत्व बस्तर शांति समिति ने किया।



मुख्यमंत्री साय और राज्य सरकार का योगदान

नक्सल पीड़ितों ने बताया कि वे छत्तीसगढ़ सरकार और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के कार्यों से प्रभावित होकर अपनी बात दिल्ली तक लाने का साहस कर पाए हैं। राज्य सरकार ने जिस तरह से बस्तर और अन्य नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास कार्यों और सुरक्षा प्रयासों को प्राथमिकता दी है, उसने हम लोगों को यह हिम्मत दी कि वे अपनी आवाज दिल्ली में उठाए। छत्तीसगढ़ सरकार की संवेदनशीलता और सक्रियता से प्रभावित होकर, पीड़ितों ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य में जिस प्रकार से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास और पुनर्वास के लिए काम किया गया है, वह काबिल-ए-तारीफ है। राज्य सरकार ने सुरक्षा के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक विकास को प्राथमिकता दी है, जिससे प्रभावित लोगों में नई उम्मीद जागी है। एक पीड़ित ने बताया, रहमने अपने परिवार, अंग और जीवन की सुरक्षाओं खोईं, लेकिन राज्य सरकार के प्रयासों ने हमें यह हिम्मत दी कि हम अपनी बात देश की राजधानी दिल्ली तक ला सकें। मुख्यमंत्री साय ने न केवल हमारे दर्द को समझा, बल्कि हमें यह भरोसा दिलाया कि हमारे साथ न्याय होगा।

नक्सल पीड़ितों की पीड़ा और संघर्ष

मुलाकात के दौरान नक्सल पीड़ितों ने गृह मंत्री को अपनी आपबीती सुनाई कि कैसे नक्सल हिंसा ने उनके जीवन को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया। किसी ने अपने परिवार के सदस्यों को खो दिया, किसी ने अपने अंग गंवाए, और कई लोग अब भी शारीरिक और मानसिक रूप से इन हमलों के जख्मों में जूझ रहे हैं। एक पीड़ित ने बताया, इनकालिनों के कारण हमने अपना सब कुछ खो दिया। अब हमें उम्मीद है कि सरकार हमारी मदद करेगी और हमें न्याय मिलेगा। गृह मंत्री ने उनकी बातों को ध्यान से सुना और आश्वासन दिया कि सरकार नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए ठोस कदम उठाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास कार्यों को और तेजी से आगे बढ़ाया जाएगा, जिससे इन परिवारों का पुनर्वास हो सके और वे एक बार फिर सामान्य जीवन जी सकें।

जंतर मंतर पर पीड़ितों की आवाज

गृह मंत्री शाह से मुलाकात से पहले, नक्सल पीड़ितों का यह दल जंतर मंतर पर भी पहुंचा था, जहां उन्होंने अपनी समस्याओं को आम जनता के सामने रखा। इस आंदोलन का उद्देश्य था कि नक्सल प्रभावित इलाकों में विकास और शांति को प्राथमिकता दी जाए, और पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं। एक पीड़ित ने कहा, रहमने छत्तीसगढ़ सरकार के प्रयासों और विकास कार्यों से प्रेरित होकर अपनी आवाज दिल्ली तक पहुंचाने का साहस किया है। अब हमें उम्मीद है कि हमारे माताओं में स्थायी शांति आएगी और हम अपने जीवन को फिर से सुधार पाएंगे।

21 को मिलेंगे राष्ट्रपति से यह दल 21 सितंबर को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से भी मुलाकात करेगा। इस मुलाकात में नक्सल प्रभावित इलाकों में स्थायी शांति और विकास के लिए चर्चा की जाएगी। दल के सदस्य राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपेंगे, जिसमें सुरक्षा बलों की तैनाती, विकास कार्यों की गति बढ़ाने, और नक्सल हिंसा से प्रभावित परिवारों के पुनर्वास की मांग की जाएगी। इस मुलाकात के बाद नक्सल पीड़ितों में एक नई उम्मीद जागी है कि उनके संघर्ष और पीड़ा को अब राष्ट्रीय स्तर पर पहचाना जाएगा। सरकार उनके पुनर्वास के लिए ठोस कदम उठाएगी, जिससे नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शांति और विकास का नया अध्याय शुरू होगा।

हरियाणा में चुनाव प्रचार में जुटेंगे केजरीवाल

नई दिल्ली। अरविंद केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे चुके हैं। दिल्ली की जिम्मेदारी उन्होंने आतिथी को सौंप दी है। केजरीवाल अब शुक्रवार से हरियाणा में एक्टिव होने जा रहे हैं। हरियाणा में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए वह शुक्रवार से प्रचार शुरू करने जा रहे हैं। वह 20 सितंबर से जनता के बीच जाएंगे और जगधीर में रोड शो करेंगे।

देश के सबसे लंबे एक्सप्रेस वे को कुतर रहे चूहे

जयपुर। देश के सबसे लंबे दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे की खराब गुणवत्ता फिर सामने आई है। राजस्थान में दोसा जिले के भांडारेज टोल के निकट पिछले दिनों अचानक जमीन धंस गई और 10 फीट गहरा गड्ढा हो गया। एनएचएआइ के कर्मचारियों ने गड्ढे को मरम्मत तो कर दी, लेकिन सामने आया कि चूहों ने एक्सप्रेस वे के नीचे बड़े बिल बना दिए थे।

सरमा ने नए राशन कार्ड योजना का किया उद्घाटन

गुवाहाटी। असम के सीएम डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा ने गुरुवार को नए राशन कार्ड योजना का शुभारंभ किया है। सीएम बिस्वा ने एक्स पर कहा कि एनएफएसए लाभ बढ़ाने की योजना के तहत हम अन्य 12 लाख लाभार्थियों को जोड़ रहे हैं, जो हर माह मुफ्त खाद्यान्न के पात्र होंगे। इस योजना में हम प्रति माह 440 करोड़ से अधिक खर्च करेंगे। मुफ्त इलाज भी मिलेगा।

रिसॉर्ट में आग, पूरा कॉटेज जलकर खाक

कोलकाता। दक्षिण 24 परगना जिले के नामखाना के मौसुनी द्वीप पर स्थित एक पर्यटक रिसॉर्ट में भीषण आग लग गई। गुरुवार तड़के लोगों ने सुबह रिसॉर्ट के एक कॉटेज में आग भड़कती देखी। आग पूरी कॉटेज में फैल गई। लोगों ने आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन शुरुआत में वे इस पर काबू नहीं पा सके। पूरी कॉटेज खाक हो गया। रिसॉर्ट में कोई पर्यटक नहीं था।

भाजपा महासचिव ने एनसी, कांग्रेस से पाकिस्तान नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस के गठबंधन का नेतृत्व पाकिस्तान कर रहा: तरुण चुग

▶▶नई दिल्ली

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री और जम्मू-कश्मीर प्रभारी तरुण चुग ने नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस पर जम्मू-कश्मीर चुनावों में पाकिस्तान के एजेंडे को चलाने का आरोप लगाया। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ के एक टीवी चैनल को दिए बयान में कहा था कि पाकिस्तान और एनसी-कांग्रेस गठबंधन दोनों ही 370 की बहाली चाहते हैं, चुग ने कहा कि इस बयान से साफ हो गया है कि एनसी और कांग्रेस, पाकिस्तानी हुक्मरानों के इशारों पर काम कर रहे। इससे न केवल पाकिस्तान की जम्मू-कश्मीर चुनावों में हस्तक्षेप करने की भंशा

उजागर हुई, बल्कि यह भी साबित हो गया कि अब्दुल्ला और गांधी पाकिस्तानी ताकतों से निर्देश प्राप्त कर जम्मू-कश्मीर में अस्थिरता पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। अब्दुल्ला और गांधी परिवार से पाकिस्तान की आईएसआई के साथ उनके संबंधों को स्पष्ट करने की मांग करते हुए चुग ने कहा कि यह निंदनीय है कि एक राष्ट्रविरोधी गठबंधन पाकिस्तानी ताकतों के इशारों पर नाच रहा है और जम्मू-कश्मीर के लोगों को धोखे में रखा है। चुग ने कहा कि पहले भी अब्दुल्लाओं ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वे जम्मू-कश्मीर के विकास और प्रगति से वंचित करने पाक, आईएसआई द्वारा तय एजेंडे का पालन करेंगे।

नेरवा में हिंदू संगठनों ने निकाली रोष रैली, प्रदर्शन और नारों से गूंज उठा क्षेत्र



शिमला। संजोली मस्जिद विवाद में हिंदू संगठनों ने नेरवा में धरना प्रदर्शन व रोष रैली निकाली। वहीं, नारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा। पुलिस ने सांप्रदायिक टकराव से निपटने के लिए पुख्ता प्रबंध किए हैं। नेरवा बाजार में बुधवार को ही अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर दिया है। कर्णी सेना के अध्यक्ष मुकेश खुरानटा ने कहा कि गुरुवार को बाजार में शांतिपूर्वक रैली निकालकर रोष प्रकट किया जाएगा। उन्होंने समस्त हिंदू समाज से इस रैली में बढ़-चढ़ कर भाग लेने की अपील की थी।

'वर्ल्ड फूड इंडिया 2024' के पहले दिन बोले पीएम मोदी

भारत मंडपम में 22 तक होगा इसका आयोजन

एनेसी ▶▶नई दिल्ली

पीएम नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि सरकार ने पिछले 10 वर्षों में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र के विकास के लिए कई सुधार किए हैं। इसका मकसद यह सुनिश्चित करना है कि भारत खाद्य क्षेत्र में नवाचार, स्थिरता तथा सुरक्षा के वैश्विक मानक स्थापित करे। भारत मंडपम में 'वर्ल्ड फूड इंडिया 2024' के पहले दिन मोदी ने एक वीडियो संदेश में कहा कि सरकार प्रतिबद्ध है कि देश खाद्य क्षेत्र में नवाचार, स्थिरता और सुरक्षा के लिए वैश्विक मानक स्थापित करे। भारत में एक जीवंत और विविध खाद्य संस्कृति है। उन्होंने कहा कि किसान देश के खाद्य पारिस्थितिकी तंत्र की रीढ़ हैं। 22 सितंबर तक राष्ट्रीय राजधानी में यह आयोजित है।

90 से अधिक देश हिस्सा ले रहे

इस कार्यक्रम में 90 से अधिक देश हिस्सा ले रहे हैं। पीएम ने अपने संदेश में कहा कि 'वर्ल्ड फूड इंडिया 2024' के आयोजन के बारे में जानकारी खुशी हुई। दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए सभी प्रतिभागियों को बधाई और शुभकामनाएं।

पारिस्थितिकी तंत्र को बना रहे मजबूत

पीएम ने कहा कि खाद्य प्रसंस्करण में शत प्रतिशत एफडीआई, प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना, सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों का औद्योगिककरण, खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना जैसी बहुआयामी पहलों के माध्यम से हम पूरे देश में आधुनिक बुनियादी ढांचे, मजबूत आपूर्ति श्रृंखलाओं का एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र बना रहे हैं।

राहुल पर भाजपा के बयानों को आपत्तिजनक बताते हुए खरगे ने लिखा था पीएम को पत्र नड्डा ने पत्र लिख खरगे को दिया जवाब, मोदी पर कांग्रेस के हमले याद दिलाए

▶▶नई दिल्ली

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को चिट्ठी लिखी है। नड्डा को यह चिट्ठी खरगे द्वारा दो दिन पहले पीएम मोदी को लिखे पत्र का जवाब है। नड्डा ने लिखा कि कांग्रेस के खरगे की बातें सच से दूर हैं। राहुल गांधी ने पीएम मोदी को लेकर आपत्तिजनक बातें कही थीं। नड्डा ने कहा कि सोनिया गांधी ने भी पीएम मोदी को मौत का सौदागर कहा था। उन्होंने कहा कि राहुल को महिमामंडित करना अब खरगे की मजबूरी बन गया है। कांग्रेस एंड कंपनी ने पिछले 10 सालों में देश के यशस्वी पीएम को 110 से अधिक गालियां

दी हैं और दुर्भाग्य की बात यह भी है कि इसमें कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व भी शामिल है। तब क्यों राजनीतिक शुचिता, मर्यादा, अनुशासन, शिष्टाचार जैसे शब्द आपकी ओर कांग्रेस की शब्दावली से गायब हो जाते हैं? एक तरफ आप राजनीतिक शुचिता की दुहाई दे रहे हैं लेकिन दूसरी ओर आपकी पार्टी और आपके नेताओं का इतिहास ही राजनीतिक शुचिता की ध्वजियां उड़ाने का रहा है। ऐसा दोहरा रवैया क्यों? खरगे ने पीएम मोदी को जन्मदिन की बधाई देने के साथ केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू और एक भाजपा नेता के राहुलको आतंकी कहने पर पत्र लिखा था। खरगे ने लिखा कि मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि भारतीय जनता पार्टी और आपके सहयोगी दलों के नेताओं ने जिस हिंसक भाषा का प्रयोग किया है, वह भविष्य के लिए घातक है। विश्व हैरान है कि सरकार में रेल राज्य मंत्री, भाजपा शासित

उत्तर प्रदेश के मंत्री, लोक सभा में प्रतिपक्ष के नेता को नंबर एक आतंकवादी कह रहे हैं। महाराष्ट्र में आपकी सरकार में सहयोगी दल का एक विधायक, नेता प्रतिपक्ष की जुबान काट कर लाने वाले को 11 लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा कर रहे हैं। दिल्ली में एक भाजपा नेता एवं पूर्व विधायक, उनका हथ वृद्धि का इनाम देने के दावे हैं। अब खरगे ने इसी पत्र पर नड्डा ने जवाब दिया है। नड्डा आपके द्वारा कही गई बातें यथार्थ और सत्य से कोसों दूर हैं। क्या आप राहुल की करतूत भूल गए? राहुल ने कई बार पीएम मोदी का अपमान किया। सोनिया गांधी ने तो पीएम को मौत का सौदागर कहा था। कांग्रेस ने कई बार पीएम मोदी का अपमान किया है। कांग्रेस ने देश को शर्मसार किया है। सोनिया गांधी ने मोदी जी के लिए 'मौत का सौदागर' जैसे अत्यंत असभ्य अपशब्दों का प्रयोग किया था।

खरगे का पत्र पीएम मोदी ने मेजा नड्डा को, गरमा गई सियासत, नड्डा के बोल पर बिफरे जयराम

कांग्रेस पार्टी ने इस बार पर कड़ी आपत्ति दर्ज की है कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर भाजपा नेताओं को इस बात की नसीहत देने को कहा कि वे राहुल गांधी के खिलाफ अमर्शल आरोप लगाना बंद करें, मगर वो पत्र पीएम मोदी ने पार्टी अध्यक्ष जगत प्रकाश लड़ा को भेज दिया। कांग्रेस के सचिव विमान के अध्यक्ष और राज्यसभा सदस्य जयराम रमेश ने भाजपा अध्यक्ष को पत्र लिख कर कहा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इस बात से न सिर्फ आश्चर्यचकित है बल्कि चिंतित भी है कि हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे जी द्वारा प्रधानमंत्री को लिखित पत्र आपके पास प्रतिक्रिया के लिए भेजा गया। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की जान को खतरे जैसे गंभीर मामले पर प्रधानमंत्री को गुपची बहुत परेशान करने वाली है। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने जयराम के पत्र पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, समझ नहीं आता कांग्रेस पार्टी के नेता चाहते क्या हैं? खरगे ने पार्टी नेताओं पर लगाव लगाने की नसीहत देते हुए पीएम मोदी को पत्र लिख कर ही वाकफ किया।